



















१०१५८०

प्रगल्भकर्ता  
श्री जैनधर्म प्रसारक  
सच्चा.  
जावनगर.

डिंडकहिताशिक्षा अपरनाम गणपदिपिकासमीर.

किंमत आठ आना  
संवत् १९४८  
अमदावाद युनियन  
प्रीन्टींग प्रेस

१०१५८०



10/1/2012

प्रगटकर्ता  
श्री जैनधर्म प्रसारक  
सच्चा.  
जावनगर.

उदकहितशिक्षा अपरनाम गापदिपिकासमीर.

किंमत आठ आना  
संवत् १९४८  
अमदावाद युनियन  
प्रीन्टींग प्रेस

10/1/2012



# हुंठक हिताशिक्षा.

अपरनाम

## गप्प दीपिका समीर.

(हुंठकमणि आर्या पार्वतीकी वनावेली ज्ञान दीपिका—वास्तविक गप्प दीपिकाका खंमन)

विदित हो के इम हुंमावसर्पिण कालमें बहुत बातें आश्चर्यकारी हो गइ हैं, और होती चली जाती हैं. तिनमेंमे एक यहूजी बात सुइजनो के हृदयमें आश्चर्यजनक हैकि स्त्रियांजी पुरुषोंकी सजामें बैठके व्याख्यान करती हैं. और प्रश्नोत्तर रूप खंमन खंमनकी पुस्तकेंजी रचती हैं. जैसे पार्वतीनामा हुंठकणीने ज्ञान दीपिकानामे पुस्तक रचा है. आश्चर्य तो यह हैकि जैनशासनमें हजारो साधवीयां हो गइ हैं परंकिमी साधवीका रचा हुआ कोई पुस्तक वांचने और सुननेमें नहीं आया है. तथा श्री महावीरस्वामीकी उत्तीम हजार साधवीयांथी, उनमेंसें अनेक साधवीयांनें अनेक प्रकारके तप करे है तथा एकादशांग शास्त्र पढ़े है परं किमी साधवीने पुस्तक नहीं रचा है; और न पुरुषोंकी सजामें बैठके धर्मोपदेश करा है. क्योंकि श्री नंदीजीसूत्रमें ऐसा पाठ हैकि जिस तीर्थकरके शासनमें जिनने गिप्प चार प्रकारकी बुद्धि करके सहित होवे तिस तीर्थकरके शासनमें तितने हजार वा लाख भकीएक शास्त्र होने है. परं साधवीयांके रचे शास्त्र किसी शास्त्र-

येंजी नहीं कथन करे है. जैनमतके विना अन्य मतोंमें हमने नहीं सुना हैकि स्त्रीका रचा अमुक शास्त्र है, वा अमुक स्त्रीने पुरुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करा, वा स्त्रीकों पुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करनेकी आज्ञा है. अब पाठजनो! विचार करना चाहियेकि पार्वती दुंदकणीने पुस्तक रचा है सो जैनमतके शास्त्रकी आज्ञासे रचा है तबतो शास्त्रका पाठ दिखलाना चाहिये; जेकर शास्त्रव्याज्ञामें विनाही रचा है तब तो शास्त्राज्ञाके जंग करने प्रायश्चित लेना चाहिये. जेकर पार्वती दुंदकणीने ऐसा विचार करा होवेगाकि 'जगवंतकी आज्ञा जंग करणरूप उपा मेरेकों लगा तो क्या हुआ मेरी पंमिताइ तो दुंदक लोक में प्रगट हो गई' परंतु ऐसा विचार बुद्धिमानोकातो नहीं है.

पूर्वपक्ष-क्या अमरसिंह दुंदकके समुदायमें कोइ पुस्तक रचने योग्य दुंदक साधु नहीं था जिस्से पार्वती दुंदकणीकों ज्ञान दीपिका पुस्तक रचना पमा?

उत्तर-यह तो माननाही पमेगाकि अमरसिंहका कंइजी चेला पुस्तक रचने सामर्थ्य नहींथा तबहीतो स्त्री उच्यत पार्वती दुंदकणीकों पुस्तक रचना पमा.

प्रश्न-पार्वतीने जो पुस्तक रचा हैसो अज्ञा काम कहे वा नहीं?

उत्तर-जैनशास्त्रानुसार तो यह काम अज्ञा नहीं करा है मश-दुंदक साधु श्रावकोंने पार्वतीकों पुस्तक रचने मना क्यों नहीं करा क्या उन लोकोंका यह मथर नहीं थी के शास्त्रमें किमी स्त्रीका रचा पुस्तक नहीं चला है.

उत्तर वे विचार तो शास्त्र अर्थीतरसें पढे मुनेही नदेंतो फेर वे मना करनेमें सामर्थ्य कैमें होंगे. जेकर वे प

दृष्ट है तां वेही वतला देवे के अमुक जैनमतके शास्त्रमें स्त्रीकों पुस्तक रचना और पुरुषोंकी मन्त्रमें व्याख्यान करना चला है.

मश्र-दुंडक साधु श्रावकनों बहुत आनंदित हुएहैं के हमारी पार्वतीने कैसी अच्छी ज्ञान दीपिका रची है.

उत्तर-ये सबे जैनशास्त्रोंके अनभिज्ञ हैं. इस वास्ते परस्पर श्लाघा करते हैं. किसी कविने यह श्लोकजी कहाहैं.

उप्राणां विवाहेतु गर्दना वेद पाठकाः ।  
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूप महोध्वनिः॥

मश्र-ज्ञान दीपिकाके उपर यह लिखा दूया हैकि "बाल ब्रह्मचारी श्रीमती पार्वती" सो यह लेख ठीक है वा नहीं ?

उत्तर-हे जन्य ! हमकों किसीके गुणोंमें शर्पा नहीं हैकि हम जीवमें यह गुण क्यों दूया. परंतु मन्यगुण होगा तब हम उनके गुणकों धन्यवाद कहेंगे. क्योंकि ये पार्वती मश्रम जिन दुंडक दुंडकणीकी शिष्याणीथी तिनमें जैमासाधुपणा अथवा ब्रह्मचर्य वा बाल ब्रह्मचर्यथा नोनो आगरके बहुत लोक जानतेहैं क्योंकि जैन तत्त्वादर्शके रचने वाले हमारे गुरुमहाराजनेजी संवत् १७२० की सालका चतुर्मास आगरमेंही करा था. इस वास्ते पार्वतीके गुरु वा गुरुणीके स्वरूपकों अच्छीतरसे जानते हैं. उनमें रहके तथा उनकों गोमके कितनेक दिनोंतक एकजी रहके हमने बाल ब्रह्मचर्य पाला सोवेगा ना हम इसके बाल ब्रह्मचर्यकोंजी धन्यवाद देने हैं. क्योंकि अपने अपने गुण अथगुण सबकों मान्य सोते हैं. किसीके कहने वा लिपनेसे किसीके

गुण अवगुण जाते आते नहीं है. हगनां सर्व ब्रह्मचारी  
 बाल ब्रह्मचारीयोंके गुणाके यशवाद बोलने वाले हैं. परं  
 स्त्रीकों “बाल ब्रह्मचारी” ऐसा लेख जिसने लिखा व  
 लिखवाया उपवाया होगा वोतो बमाही मूर्ख होवेगा  
 क्योंकि स्त्रीको पुरुष लिखना अयुक्त है. ‘बाल ब्रह्मचारी’  
 तो पुरुषकों लिखा जाता है. स्त्रीकों तो ‘बाल ब्रह्मचारिणी’  
 ऐसा लिखना सम्मत है, इम वास्ते “आंधे चूहे थोथे  
 धान, जैसे गुरु तैसे यजमान;” यह कहना ठीक हो गया.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीको तो हुंढक लोक बनी पंमि-  
 तानि मानते है तो फेर पार्वती हुंढकणीने ‘ब्रह्मचारी’ श-  
 व्दकों सुधारा क्यों नहीं होवेगा ?

उत्तर-जेकर पार्वतीमे इतनी बुद्धि होती तो सुधारा  
 करती परंतु पार्वतीकी रची पुस्तकके सुधारने वाले पंमि-  
 तानिबुद्धिनी निर्मल नहींथी नहीं तो थोमेसे लो-  
 जके वास्ते स्त्रीकी रची महा अशुद्ध पुस्तकके सुधारनेसे  
 अपनी बुद्धिको कलंकित न करता.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीने जो ज्ञानदीपिका रची है ति-  
 समे कितनीक वार्ते जैनतत्वादर्श ग्रंथकी लेके दाखल करी  
 है ऐसा मालुम होता है तो फेर पार्वतीने जैनतत्वादर्शका  
 और तिसके कर्त्ताका अपमान किस वास्ते करा है ?

उत्तर-उक्त ग्रंथके कर्त्ताने तो सज्जानोंके उपकार :  
 स्ते ग्रंथ रचा है परंतु कृतग्रीजन तो उपकार नहीं मा-  
 है. यह उनकी प्रकृतिका सजावही है. जैसे वृषित महि  
 मरोवरमेंसे निर्मल पानी पीके उस सरोवरमे मूते बि-  
 नहीं रहती है. तैसेही छर्जनोका सजाव है. इस बात  
 किमी पंमितने श्लोकनी लिखा है.

विना पराप वादेन नतृप्यते उर्जनो जनः।  
काकःसर्वरसान्भुंक्त्वा विना मेध्यं नतृप्यति।

यह पार्वती शब्दज्ञान अर्थात् संस्कृत माकृत के व्यकरणके बोधमें रहित है तो फेर इस विचारीको शास्त्रबोध कैसे होवे? और विना बोधके लोकोंके धाम जो मन आवे मो स्वकपोल कल्पित कहती फिरती है और अगमग, लेकिनादि शब्द लिखके एक पोथी बनाइ है. जिसका नाम "ज्ञान-दीपिका-जैनोद्योत" रख्या है. ज्योंकि इस ज्ञान दीपिका रचनेमें पहिले दुंदक लोक यके अंगकारमें फिरने होंगे. इस जैनोद्योतमें उन विचारोंको दर्शाने लगा है इस हेतुमें पार्वती दुंदक लोकोंको तो परीक्षरी है परंतु इनने जो जिनाज्ञाका जंगम्य पुस्तक रचाइस्य पापमें इस विचारीको क्या आपत्तियें होवेगी और इसको उद्योत कान करेगा यह तो हम नहीं जानते है.

प्रथम-पार्वतीने तो अपनी रची ज्ञान दीपिकामें संस्कृत माकृत श्लोक और 'तग्मात कारणात्' 'इत्यर्थ' 'इति हेम' 'अग्मात कारणात्' 'पूर्वक' इत्यादिक अनेक संस्कृत शब्द लिखे है तो फेर पार्वती संस्कृतान्तिककी जानकार क्यों नहीं

उत्तर जैसे किमी ब्राह्मणने अपना जूना गठवानाश्र इस वास्ते धर्मकारीको कहता है "हे चर्मणि चर्मन कुप्रगतः" तब चर्मकारी कहती है "बाहिरों उरिमें नम्रगत" जैसी यह संस्कृत है ऐसीही पार्वती दुंदकणीको लिखी यह संस्कृत है. जब ए विचारी कदाचित् मारस्तान व्याकरणमात्रनी अर्थीनरेंसे पठ जावेगी तब अपनी रची ज्ञान दीपिका यांनके मनमें पक्षात्ताप करेगी के मे मूर्खणीने अ-



प्रवाल कवरमेन नामका बनियाथा. उसने मनोहरदासके  
 टोलेके रत्नचंद्रजीके पास दीक्षा लीनीथी परंतु कवरमेन  
 रत्नचंद्रकी आज्ञा प्रमाण नहीं चलताथा. इम वास्ते र-  
 तनचंद्रजीने उमकों अपनी समुदायसे अलग कर रखाथा.  
 कवरमेन बहुत करके आगरमें रहनाथा. बालुगंजमें उमकी  
 किननीक उकानेजीथी. और कवरमेन मालदारजीथा.  
 तिमने मिहौरा गाममें बुले जावमेकी बेटी विधवा हीरां-  
 को जिसतरमें तहांसे ले गयाथा सो वृत्तांत सिहारेके लोक  
 मर्ब जानते है. आगरमें दुंडकणीके वेषमें हीरां रहेतीथी  
 कवरमेन और हीरांका जेसा आचार व्यवहारथा सो मर्ब  
 आगरके श्रावक जानते है. संवत् १९२० में श्री आत्माराम-  
 जीने दुंडकपनेमें शाय्य पहने वास्ते श्री रत्नचंद्रजीके पास  
 चौमासा आगरमें कराथा तिम अजमेरमें हीरां पंजाबी माधु  
 जानकर कदे एकवार श्री आत्मारामजीके पास बंदना क-  
 रनेकों आया करतीथी. तिम अजमेरमें रत्नचंद्रकी आ-  
 य्यके पास बिना दीक्षा लीयां मोहनी १ सुंदरी २ जी-  
 यो ३ डुरगी ४ बगरे छोटी उमरकी ठोकरीयांथी परंतु  
 हीरांके पास पार्वती बिना दीक्षा लीयां उम बघनथी वा  
 नहीथी यह निश्चय आत्मारामजीका नहीं है. परंतु जब य-  
 मुनापार दोघट्ट गाममें संवत् १९२४ में श्री आत्मारामजी-  
 का चेला नानकचंद्र और धनीगमका चेला गोर्धन और  
 चतुरभुजजीका चेला जरताने पागमर बटिमें दीक्षा ली-  
 नीथी तिम अजमेरमें हीरांके साथ यह पार्वती लगजग  
 १४ वा १५ वर्षकी उमरमें गहने पहने हूइ देखीगी. धां-  
 केही दिन पीछे अजमेर गाममें चतुरभुजने जब अन्य ठोक-  
 रीयांकों दीक्षा दीनीथी तिनके साथही यह पार्वतीजी गुं-

मित हूँ। पीठे हीरां पार्वतीको साथ लेके सिद्धारे गा-  
 ममें अपना मुख उजला करने वास्ते गइथी। पीठे हीरां  
 और पार्वती आगरेमें गइथी। तीहां कवरसेन और कवर-  
 सेनके चेले स्याममुखके साथ इसकी क्या जाने किस वा-  
 तके वास्ते खटपट हूँ। यह तो इस पार्वतीकोही मालुम हो  
 वेगी। तहांसे एकली रुसके ये निकलके कहां कहां रही  
 और क्या क्या समाचारी साथी सोझी पार्वतीकोही मालुम  
 है। पीठे लुहारे गाममें आइ तहां लुहारेके बच्चियोंने इसकी  
 कितनीक वस्तुज ले लीनी। तद पीठे पार्वती अमरसिंहके  
 टोलेमें आइ. संवत १९३० में जब श्री आत्मारामजीने स-  
 हर अंजालेमें चतुर्मास कराया तब कवरसेनने श्री आत्मा  
 रामजीको एक चिठी लिखीथी तिसमें ऐसा लिखाथा  
 “अमरसिंहने मेरी चेली पार्वती ले लीनी है जेकर तुम मे  
 शाहता करो क्योंकि तुम मेरे गुरूके पास पढेहो। इस वा-  
 जब गारमीको ठीकजनी होती है तब सूर्यके मनमुल ढेर  
 जाती। उस वामे तुमारे साथी श्रावक पंजाबमें नहोतमें  
 जेकर तौ गारक मुजहों महायता करे तो मैं पंजाबमें अ-  
 दर महागामी कनेगीं तथा अन्य प्रकाशमें अमरसिंह  
 फीका करे। अपनी चेली ले लुंगा” तब आत्मारामजी  
 विचारके अकार में कवरसेनको महाय लेजंगा तो तौ पं-  
 जाबमें बहुत अज धर्मही निंदा कगोया। इस वामे  
 अमरसिंहने चिठीका जवाब नहीं लिखाथा। अब कवरसेन  
 तब अमरसिंहको मा गये है और हीरां विचारी पार्वती  
 अनेक वामे प्राणमें गये रही है। क्योंकि अपने अमरके  
 अनेक वामे प्राणमें गये रही है। अमरसिंहके अनेक प्रा-  
 णमें अनेक वामे प्राणमें गये रही है। अनेक प्रा-  
 णमें अनेक वामे प्राणमें गये रही है।

हराकि लुहार गाममें हीरे हुंढीये श्रावककी पांतीकों ठाने निकलनाके पंजाबमें जेज दीनी. तिसके घरके यद्यपि ठोहरकीकों पीउे ले गये. तोजी तिमके गाममे मुकलावा नहीं लेनेथे. और लुहार गामके बनियोन हुंढकपंथ ठोरुके दिगंबर मंदिरमें पूजा करने लग गयेक. और पार्वतीकोतो पंजाबके हुंढकोने पंमितानीके चक्रपर चढा दइके. अथ इसकी रची पोथीमें इसका ज्ञापना कुछ बोलनी नहीं आतीहै इसबास्त ज्ञापना शुद्धाशुद्धके समझने वालेन इसकी ज्ञानदीपिका देख लेनी. अथर शुद्धाशुद्धका विस्तार लिपके फोगद प्रयास करनेकी जरूर नहींहै.

अथ पार्वतीकी पोथीका उत्तर लिखतेहै.

प्रथम ज्ञानदीपिका पोथीकी प्रस्तापनाके पृष्ठ ८ उत्तर पार्वती लिखतीहै "दीपकमें अनेक जीव दग्ध होकर साणंत होजातेहै, इस लिये दीपक समशानतुल्य होजातेहै."

उत्तर-इस लेखनं तो चारोबाणोंके घर समशानतुल्य होगये. और गवे हलवाइयादिकी नहीयांजी समशानतुल्य हो गइयो, क्योंकि सबके घरमें दीपक, चुन्डे, तंडर इथके हारे आदिमें अनेक जीव पनके घर जातेहै, और ठाकुर-छारे शिवालंगेशादि समशानतुल्य होगये, और तेरे हुंढक श्रावकोंके घरजी समशानतुल्य होगये, और उनके घरमें नुं जिज्ञा लातीहै तो तेरी जिज्ञाजी समशानतुल्य घरोंकी मित्त हो गइ, तिन जिज्ञाके खानेमें तेरी देह वृद्धिजी समशानतुल्य होगइ, उन बास्ते तेरा लेख सममंजगहै अरुहो ! इस जिज्ञाकी मुहूर्थकीं यथार्थ लिखना कहानें आवे नया कि एता मुहूर्थकीं नैजी है.

पृष्ठ ४ उत्तर पार्वतीनें लखजी हुंढककी दीक्षाका सं-

वत ३७३० का लिखा है सो जुग लिखा है. क्योंकि अ-  
मरसिंह हुंढकके वमेरे अमोलकचंद्र हुंढकने अपने हाथकी  
लिखी हुंढक पट्टावलिमें लवजीकी दीक्षाका संवत ३७०९  
का लिखा है. सो पट्टावली हमारे गुरुके पास है.

पार्वतीने लवजीके गुरु यतिका हाल लिखा है सो श्री  
जुग लिखा है. क्योंकि लवजी हुंढकका जो गुरुथा सो  
लौकेका यतिथा. जिनोने प्रतिमाकी उठापना करी, और  
इकतीससूत्र सचे मानेथे सोइथा. और जैनतत्त्वादर्शमें जो  
लवजीकी वजरंगजीके साथ जो आचारकी वावत चरचा  
लिखी है तिसमें वजरंगजीको शिथिलाचारी लिखा है सो  
श्री हुंढकोंकी कल्पित समाचारीके लेखानुसार लिखा है.

पांचमी पृष्ठसें लेके दशमी पृष्ठकी चौथी पंक्ति तक जो  
लेख पार्वती हुंढकणीने लिखा है सो सर्व मनकल्पित, जुग  
और वेपगान्त लिखा है. और व्यवहारसूत्रकी चूलिका  
के अनुसार जो जो वातां लीखी है वे सब उसकी समजमें  
चीपरीत आइ है. क्योंकि व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक  
प्रमाण लिखा है सो तो हमारे मस्तकपर है. परंतु उस  
का नावार्थ इस हुंढकणीने यथार्थ नहीं लिखा है. उस  
बीच श्री नञ्चाहुस्वामि लिखते है कि चैत्य छव्यके हरे  
वाले मुनि होंगे अर्थात् जिन प्रतिमाके छव्यके चोरनेवाले  
माधु होंगे तथा लोचन करके माला रोपण, जिन जन्म म  
होन्मय, उजमणादिक तथा जिनविंय प्रतिष्ठायोकी जं  
विधि है उम विधिकों त्याग करके अविधि पंथमे परमे  
इत्यादि पाठ है. सो उपर मुजिय काम करनेवालेकों तं  
दपनी निन्दनेही है. परंतु पार्वतीका तो मुप भीठा नह  
नेवाहै. क्योंकि इम पाठमें तो जिनप्रतिमाके छव्य हरे

वालेकी और माला रोपणादि जिनविध प्रतिष्ठा पर्यंत जि-  
तने काम हैं सो सर्वही काम जो यथार्थ विधिसहित करना  
न्याय करके अविधिमें करेंगे इनकी बातें हैं इमी पाठमें  
तो मजबुत सिद्ध होता हैकि पुरातन काम अविधिमें नहीं  
करने किंतु विधिसहित करने चाहिये. क्योंकि जब पाठमें  
ऐसा लिखाकि विधिमें अविधिमें पढ़ेंगे तब प्रथम विधिमें  
होंगे तो अविधिमें पढ़ेंगे, इस पाठमें विधि सिद्ध हो गई.  
जब जज्ञवाहुस्वामीने विधिसहित पुरातन काम करने कथन  
करे तो फेर उन कामोंको कौन निर्धर्मो प्राणी बिना निषे-  
ध कर सकते हैं. अपरंच इन हुंदीये समान प्रतिज्ञा भ्रष्ट  
थोमेही प्राणी होंगे क्योंकि जज्ञवाहुस्वामीके कथन कर  
व्यवहारमूत्रकी चूलिकामें चंडगुप्त राजाके स्वप्नके अर्थ  
तो ब्रह्मण करते हैं और उनही श्री जज्ञवाहुस्वामीकी करी  
हुई नियुक्तियां नहीं मानते हैं इमी वास्ते एही चूलिकामें  
चोथे स्वप्नमें जो मूत्रका चोर, अर्थज्ञा चोर विंगरे लिखा  
है सो हुंदकोके वास्तेही है वो पाठ इस प्रकारका है.

चतुर्थे स्वप्नमें भूत नाचना | तेण कर्म कुमति जन  
देव्या तह फलम

चतुर्थे चूयाणञ्चंति तेणकुमनजणा ॥

परंपरा आगमथी चादिर पठजे | सञ्चंदे आचार आचरीने  
पुराचार्योनी परंपराथी चादिर. | परंतु पुराचार्योनी गीने नहीं

परंपरागमेणं बहीया सञ्चंदाचार चारीया ॥

सायमेव संजय क्षेत्रे. परंतु | आकाशथी पर्याणीपरं. जेस  
शुभमिषे नहीं. एकारणथी. | आकाशथी पर्याणा भायाप

नहीं तेम से पाए शुभरिना संजय क्षेत्रे.

सयमेवसंजमीया आगासप्रियाइव ॥

विनाविचारी ज्ञापाना बोलणहार. वांजना पुत्रनीपं असत

निधधंसनासिणो वंप्रा पुत्ता इव ॥

अव्यालिंगना धारणहार जिहांतिहां सूत्र जणे तिहां.

द्वलिंगधारीणो जथ्यतथ्येवसुत्तमवगाहित

तपना चोर. वचनना चोर. सूत्रना चोर.

तवतेणिया वयतेणिया सुत्ततेणिया ॥

अर्थना चोर. साचा अर्थ ज्ञां | भूतनी पेटे नाचशे ते कुमति  
जशे. जूठा अर्थ करशे ते. | भूतरूप जाणवा. ४

अथ्यतेणिया चूयाइवणच्चरसंति ॥४॥

हे पार्वती टुंढकणी ! इस व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक  
चोथा स्वप्नमां जो लिखाहै कि 'भूत नचेंगे' इस मुजिव त  
तेरा जौनसा मत है सोइ भूत नचते है. क्योंकि इस स्व  
के फलमें श्री नड्वाहुस्वामी कहते हैकि पर्वाचार्योंकी प  
रंपरासैं रहित, स्वच्छंटाचारी, अपने आप विनागुरु संय  
लेवेंगे. जैसें कोइ आकाशमेंमें पमे उनके मावाप नही हों  
है वैसेही विना गुरु अपने आप संयम लेवेंगे. विना विचा  
बोलनेवाले. वांजके पुत्र सदश असत यानि नही जैसें, ९  
व्यालिंगके धरनेवाले जिहांतिहां सूत्र जणेंगे तिहां तप  
चोर, वचनके चोर, सूत्रके चोर, अर्थके चोर यथार्थ व  
र्थकों मिटाके जुठे स्वकपोल कल्पित अर्थ करेंगे-वे कु  
तिजन भूतकीतरे नचेंगे. सो हमकों यथार्थ मालूम होया  
जौनसैं कुमतिरूपी भूत श्री नड्वाहुस्वामीने कथन करे  
सो तुमहीहो. क्योंकि सूत्राचार्योंकी परंपरा रहित अपने आ

यकपोल कल्पित आचार द्वाचरनेवाला और स्वयमेव मं-  
 यम लेनेवाला तुमारा गुरुया. क्योंकि उन तुमारे गुरुका  
 तोइनी गुरुया नहीं. और गण्पदीपिकामें जो गुरु परंपराय  
 लेयीहैं ना सर्व स्वकपोल कल्पित पार्वतीने लिपीहैं. इस  
 तातका सर्व निराकरण जाये करंगे. तुमारा आदि गुरु  
 कोइ न होनेमें आकाशमें परे शदश तुम हो. तपकी चो-  
 री करनेवाले तुम हो क्योंकि जगवानके कथनमें विपरीत  
 करते हो वचनके चोर तुम हो क्योंकि जगवानके वचनोंके उच्चा  
 पक हो. जैनमतके सर्व मुरातो नगी माननेमें मृशके चोर हो.  
 पर्वोचार्योक्त अर्थहें जामके अपनी मति कल्पनामें विप-  
 रीत अर्थ करने हो इस वाग्ने अर्थके चोइनी तुमनी हो.  
 इस उपरके लेशमें सिद्ध होताहै कि तुमनिर्गपी भूत तुमही  
 हो उर तुमही नचते हो.

पृष्ठ ५ वें पार्वतीने लिख्य संवत् ७३७ के लगत्त  
 राग वर्षी काल पत्ता लिखा है सोजी इउ लिखा है. क्यों  
 कि किर्मीली इतिहास नवरीपमें गी लिखाहै कि उक्त  
 संवत्में राग वर्षी काल पत्ताया. बलके उक्त संवत्में नो  
 सर्व सिद्धमानमें राजा भजा और सर्व पत्तों के धर्म और वि-  
 शेष कके जैनधर्म भर्षलिन था. और श्री नंदीजी मृशकी  
 आशीकी ३७ वीं ताशामें तथा ताया, दीक्षा, स्वमे लि-  
 खाहै कि श्री मंडिल्लाचार्यके समयमें राग वर्षीका काल  
 पत्ताया. सो मंडिल्लाचार्य श्री जगंत म्शरीर स्वामीके  
 २७ में पाट उपर हुआ है, और जिनके समयमें कदाच  
 शान था. पुस्तकावद नहीं हुआथा. अब वाग्ने पार्वतीने  
 राग वर्षी का न संवत् ७३७ में पत्ता लिखा उनमें जो  
 वमी मृती वा लिखनेवाली सिद्ध होती है.

पार्वतीने पृष्ठ ७ में लिखा है कि "जैनतत्त्वदर्शने लिखा है कि साधु चैत्य उद्यकी रक्षा करे अर्थात् चैत्य उद्यके नाश करनेवालेको हत्या, मना करे" यह लेख ई नशाखानुसार तो सत्य है. परंतु पीछे पार्वती हुंकारणी यह लिखती है कि 'ऐसा काम करनेसे साधुको धन-मालकीयत हो गई.' हम पढ़ते हैं कि उस पार्वतीकोही का पुरुष उमठानादि छोटे जावोंमें अनेक प्रकारके उपद्रव करता होवे तब चारोयणीमेंसे जितने पुरुष उपद्रव दूर करणमें उद्यम करे और उपद्रव दूर करे तो क्यावे सर्व रूप उनके मालिक हो गए? नहीं हुए. इसी तरे साधु रक्षा करनेसे धनका मालिक नहीं होता है.

पार्वतीने येही पृष्ठमें लिखा है कि वारावर्षी कालमें ष्टाचारी होके यतिजी यतिजी तथा संवेगीजी संवेगीजी हाने लगे यह लेखमें लिखने वाली महा मृपावादी सिद्ध होती है क्योंकि संवत् १७०० के लगभग जबसे श्री गणिस-स्य विजयजीने और उपाध्याय श्री यशोविजय गणिजीने बहुत कठिन क्रिया करी और वैराग्यके रंगमें रंगे गये तब श्री संघ उनको संवेगी कहने लगे. क्योंकि श्री उत्तराध्ययन सूत्रके १९ मे अध्ययनमें ऐसा पाठ है-संवेगेणं जंते जीवे किंजणः इहां संवेग नाम वैराग्यका है. संवेग होवे जीसकों सो संवेगी. यह गुण निष्पन्न नाम है. सर्व पंक्तियोंमें प्रसिद्ध है. यह यथार्थ गुणनिष्पन्न नाम यति और संवेगी सुनके पार्वतीको क्यों अनिष्ट लगता है?

पार्वतीने लिखा है कि संवत् १७३० मे वारावर्षी उकाल पना तिममे कितनेही सूत्र विच्छेद हो गये. यहनी एक

गण्य जिनके हैं, क्योंकि चार वर्षका काल तो स्कंदिलाचार्यके समयमें पहिले पत्ता और देवादि गणित द्वाया श्रमण-जीने पुस्तके तो पहले लिखे हैं, तो फेर चार वर्षके कालमें मात्र कैमें लिखे हुए व्यवहृत हो गये !

तथा दुर्गा पृष्ठमें उगीने लिखा है कि " संवत् ११०० के लगनग मृगश्रीकी टीका रची गई है." यह लेखनि नि गकी अज्ञताका है, क्योंकि संवत् १०५५ में तो श्री हरि-उत्तुमि दिवंगत हुए, तिनकी रची श्री व्यावश्यक, पत्रवणा, नीरार्जिनगम, नंदी, दश धकात्रिक प्रमुप शान्तीकी टीका है, और १११११ ग्रंथ उन्ने रचे है, श्री शीलाकाचार्यने संवत् ७७२ में आचारिणादिकी टीका रची है, और विदे-पावश्यककी टीका मोपद्म श्री जिनजइ गणित द्वाया श्रम-णजीने रची है, जो श्री हरिउत्तुमिजीमें पहिले हुए है, मयें ज्ञाप्य और चण्डी टीका मयें पूर्वधारीयोंकी रची हुई है, नवांगकी टीका श्री नरनयदेवसुमिजीने संवत् ११०० के लगनग रची है, इन मर्दानायोंने जो टीका रची है वे मयें गुरु परंपरायमें कंडाग्र अर्थोंकी भारणा चली आइयी तो रची है, इन टीकादिके अनुसार पामचंदने ज्ञाप्य कि-चित्त मान दृष्टात्म्य अर्थ लिखा है, जो इन दुंदक दुंदकणी-योंको व्याख्यान है, परंतु इन दुंदक दुंदकणीयोंने कथा-र्थमें कृतज्ञे ज्ञापके कुछ योग्यता नहीं व्यथानाग रच दीया है, संवत् १००० के पहिले लिखे अर्थ तो प्राये उ-रयें गुरु है, इन दुंदकोने चने मार्ग कामके बंधन बधि है, एत व्यावश्यकताता ग्रंथ जिनमें अग्रमम नगमम मिलाके नरीन रच लीना है, क्योंकि संवत् १००० में पहिलेकी लिखत हुनरी कल्पित व्यावश्यककी नहीं लिखली है, वर्या



नहीं लिखा है कि श्री महावीरजीके शासनके माधुर्योंकी पूजा जस्मग्रहमें बंद हो जावेंगी और विना गुण मन्मूर्छिम पंथी मुहबंधे दुंदुकाकी उदय उदय पूजा होवेगी. वारुणी पार्वती दुंदुकाणी ! नृनें तो हाथोंके पेटमें शूल हुआ और गदहकों जुलाव दे दीये समान करा. शेष दशमी अग्यारसी पृष्ठ जूनी स्वकपोल कल्पिन लिखी है. अग्यारसी पृष्ठकी १६ पंक्तिमें पार्वती लिखती है. शास्त्रानुसार क्रिया माधक, न्यागी माधु ज्ञानजी प्राचार्यों दुंदुके उनके पाम पैता-लीमत्तनोंने दीक्षा लीनी. हमनां जानतेयेंकि विचारें दुंदुक अनपमंइ हम वाम्ने जठ नाच गोलके अपना काम चला-ते हैं परंतु पार्वती तो पक्षी कहाती है और गुणावादीयोंकी प्रगप्रापिनी नीकली है. क्योंकि अमरसिंह दुंदुकाके रमे दुंदुक अमोघनकचंद्रजी तो अपनी लिखी दुंदुक पहावल्लोमें लिखता हैकि ज्ञानाचार्य ज्ञिगधारी था अर्थात् संयम र-टिन था.

पृष्ठ १७ पंक्ति ११ मीमें पार्वती लिखती है कि " सं-वेगी लोकजी गेमें जानें है कि दुंदुकमन कुलुक ज्यादा १००० शास्त्री रणमें लिखला है" यह तो उमने यमी गण लिखी है क्योंकि जिनमनके माधु तो दुंदुक मयतां इष्ट नं-वत २७०० में कर्तव है वर तो संवत २७४७ तक २७० वर्ष होते है.

तब जो पार्वती दुंदुकाणीने दुंदुकानाम पम्पारेके हेतु लिखे है सो सर्व गणें लिखे है. क्योंकि लखनौकी इया इया म-कान गदनां भिनाया, उम देवाने एहे मकानमें दुंदु च-हने है. उम ममानमें गदनेमें लखनौका नाम ली गेने दुंदु-क गणा है. एग कश्चन दुंदुक पहावल्लोयोंमें लिखता है. तब



श्री अथनिर्मुक्ति आगममें श्री नक्षत्राहस्वामी चौदह  
पूर्वधारिनें ऐसा कहा है. गाथा.

संपादम रयरेणु, पमङ्गणव वयंति मुहपत्तिं॥  
नासामुहं च बंधइ, तीए वसाहिं पमङ्गंतो ६४  
अस्यावचूरिः संपातिम सत्व रद्धणार्थं ज-  
ल्पद्भिर्मुखे दीयते । रज सचित्ररेणुस्तन  
प्रमार्जनार्थं मुखवस्त्रिकां वदंति । नासिकां  
मुखं च बध्नाति तथा मुखवस्त्रिकया वस-  
तिं प्रमार्जयन् येन मुखादौ न रजःप्रवि-  
शति ॥ ६४ ॥

ज्योति ज्ञाना-संपातिम जीवाकी रक्षा वाप्ते चौदहतां  
शकां पुत्र आगे मुखवस्त्रिका देनी तीन मदिन रजके प्र-  
मार्जन आगे मुखवस्त्रिका रयनी गाणधरादि करके है. जब  
रजके प्रमार्जन करनी तब तिन मुखवस्त्रिका करके नाक  
मुह दोनो बंधने. मुखवस्त्रिक रज न पके इस वाप्ते. ६४

पार्वती देवकामोक्षां शरणं मानं आश्रयंसे मुत्र वां-  
जंका पाठ दिगलाना वाशिसे.

पार्वती पुत्र १६ में लिखती हैकि 'सुखपत्र रते सो मु-  
खवस्त्रिका. 'यै नो हाथमें रहे सो हाथवस्त्रिका' वा ज्यो-  
तिषि पार्वतीने तथा कर्ममेन, व्याससुत्र, तीर्था वा नम-  
सोपदन्ती रती इत लिखी तनीन व्याससुत्रमें लिखी है  
'यैकि रयन मदिन आश्रयणमें नो ऐसा कर्य नही हो



मार्गमें आठ वर्षमें ठोड़ी उमर वालेकोनी दीक्षा देनी क-  
ल्येई. हम कथन निशीथ ज्ञानमें है. इस वाले विरुद्ध  
नहीं है.!

पृष्ठ २२ में लिखा हैकि "श्री हेमचंद्रमूर्तिर्जाने गाढे  
नीन करोरु ग्रंथ र्थे लिखे है नो जूठ है" उत्तर-जूठको  
मचनी जूठही मालूम होता है क्योंकि कल्पद्रुम टीकामें  
लिखा है 'श्री हेमचंद्रमूर्ति गाढे नीन करोरु ग्रंथका कर्ता  
आ है. हमारे संप्रदायमें श्लोककोनी ग्रंथ कहते है और  
एणे शास्त्रकोनी ग्रंथ कहते है. फेर पावनी लिखनी है  
तने श्लोक रचे नहीं जा सका है. उत्तर-एक अंतर्मनुष्यमें  
गाधरदेव चौदहएव किम तरेमें रच लेनेथे? जेकर कहेनी  
नो ललियमें रच लेनेथे नो इनके रचनेमें ललिय क्यों  
ी मान लेनी. पार्वती कहनी है 'ललिययां नो व्यवहृद  
गइ है.' उत्तर-तरे माने हुए किम भाव्यमें लिखा हैकि  
'रचनेकी ललिय व्यवहृद हो गइ है. पार्वती-इनने श्लोक  
कर लिखे? उत्तर-उनकी मजामें मंगल पंक्ति न्या-  
ग, काव्य, छलंकार, न्यायादिक बेसाथे, और चार  
न देवायां महायक थी. यह रचन श्री गिनपविजय  
व्यासजी ईम व्याकरणकी टीकामें लिखते है. पार्वती!  
मे विचार हो कर के १०० पंक्ति दिनभरि भी सो  
लिखे नो पचास वर्षमें अक्षरान्तर श्लोक लिखे-  
गाढे तीनकारु नो दस वर्षमें पूरा हो जावे.

पार्वती लिखनी है कि "सुदर्शिया जनमान्य है" या  
सुदर्शिया मंत्रविद्याका नाम है वा अन्य कियी प्रसूतानाम?  
सुदर्शन मंत्रविद्याका नाम है मय नो पार्वती श्री सुधर्मस्वामी  
सुधर्मस्वामीके आशयानुसार करनेवाली है. क्यों

कि सूत्रोमे जहां सुधर्म स्वाम्यादिकोका वर्णन लिखा है  
 तहां ऐसा पाठ है. विद्या पहाणे मंत्र पहाणे मंत्र  
 विद्याके जाणनेमें वरु प्रधान अर्थात् सामर्थवान् है. इस  
 प्रकारसें गणधर तो मंत्रविद्या जाननरूप वरु गुण लिखते  
 है और पार्वती भूत विद्याको अपमान लिखती है. १

पार्वती पृष्ठ २४ में लिखती है कि “चेत्यवृद्ध अर्थात्  
 ज्ञानवृद्ध” यह पाठ खाटा है और अर्थज्ञी जूठा लिख  
 है. क्योंकि श्री समवायांगजीमें ऐसा पाठ है चेत्यरुस्क  
 टीका बद्धपीठ वृद्धा येषामधःकेवलान्युत्पन्नानीति  
 चैत्यवृद्ध, चौतरावद्धवृद्ध जिनके हेठ केवल ज्ञान उत्प  
 न्न हुए थे. चैत्यवृद्धका जो पार्वतीने ‘ज्ञानवृद्ध’ ऐसा अर्थ  
 लिखा है सो मिथ्या है क्योंकि चौतरावद्ध वृद्धका नाम  
 चैत्यवृद्ध है. देव लोकादिमें तथा नमि प्रव्रज्या अध्ययनमें  
 श्री चौतरावद्ध वृद्धोका नामही चैत्यवृद्ध कहा है.

फेर इस पृष्ठमें पार्वती लिखती है कि “तीर्थकरोंके  
 दीक्षावृद्ध सूत्रोंमें नहीं चले है इस वास्ते विरुद्ध है.  
 उत्तर-तीर्थकरोके १७० एकसौ सत्तर सत्तर बोल सप्तविंश  
 स्थानक सूत्रमें लिखे है उसमें दीक्षाका वृद्धनी लिख  
 है और तेरे माने सूत्रोंमें जेकर सर्व बोल नहीं निकलेंगे  
 विरुद्ध किसके माध्य हुआ. क्या जगवंतका ज्ञाप्या स  
 ज्ञान तेरे माने शास्त्रमें आ गया? ३

पद्मप्रज्ञ और वासुपुत्र्यजीके दीक्षा तपका जो वि  
 रोध लिखती है सोनी अज्ञापणमें लिखा है. यंत्र लिख  
 ने वालेने किमी ग्रंथांतरसें मतांतरसे लिखा हावेगा. ४

मल्लिनाथजीका जन्म कल्याणक जो मथुरामें लिख

है सो यंत्र लिखने वाले ही भुज है. मिथिलामें मथुरा लि-  
खी होवेगी. इमीतरे श्री नेमिदीका कल्याणक जो मोरी-  
पुर लिखाई मोती यंत्र लिखने वालेकी भुज है. ५

श्री माह्वनाथजीको जो अहोरात्र उग्रमथ लिखा है  
सो मतांतरमें है क्योंकि नमनिशनम्यानक सूत्रमें अहोरात्र-  
काही उग्रमथ काल कहा है. जेकर पतांतरोकी बात सर्व  
जुडी मानेगी तो तेरे माने रचीम मूत्रांमेंनी परस्पर बहुत  
विरुद्ध कथन है तब तो तेरे माने मूत्रजा जुडे हो जावेंगे.  
ध्यान निश्चय बाव तो यह हैकि चौविश तीर्थसंगे एकसा  
गत्तर पाल रचीम मूत्रांमेंमें काह दिग्बलाये तब तो विरु-  
द्धा विरुद्धता विचार होवे. नहीं तो फांगट छुदनेमें क्या  
होता है ! ६

पृष्ठ २६ में पार्वती लिखनी हैकि कृपजदेवकी मा-  
तलोमें बलदेका चिन्ह लिखा है ज्येन फेर नौरांम तीर्थ-  
तोके पगोमें लक्षणा चिन्ह है यह परस्पर विरुद्ध है.

उत्तर-जो माथलोमें चिन्ह था उसमें तो कृपज नाम  
रखा गया है. ज्येन जो पगोमें चिन्ह था सो तो ज्येन अन्य  
थकगेके पगोमें चिन्ह में है. श्री कृपजदेवकी पगो-  
मी बलदेका चिन्ह था. उसमें परस्पर विरुद्ध क्या हुआ ७

पृष्ठ २६ में ३० तक पार्वतीने जो अगमम गगन  
गा है निम्नका उत्तर-देवतादश ग्रंथमें जो कुछ लि-  
खा सो सर्व ग्रंथ ग्रंथ या पद्यावली ना आत्तरिध्यादि प्र-  
त्यनमान लिखा है. पार्वती देवताकी जो इन ग्रंथों-  
मेंकी देवता देवताकी है सो इसरी भुजका है. पता  
अन्यके माथोमें देवतादे. धनक, मंत्र, देव, नमोदय  
सर्व विषयम लेखनी ८

कर्मों के करनेवाले निवेदन करते हैं, जेमा जमा २०० ६, जे  
 कान, ज्ञान हीवे २०, जेती जेमा जे पा जयो जेती  
 गति होती है, किसी जमे पणपणके नामे मंसादि  
 स्ने पमने है, किसी जमे जपनी मंसादि नामे मंसादि  
 स्ने पमने है, किसी जमे जैन मंसादि मंसादि नामे  
 मंसादि करने पमने है, किसी जमे मंसादि करने मंसादि  
 निषेध है मंसादि ज्ञान उन्वर्गापादरूप है. श्री धर्मशास्त्र  
 र्यने तथा सिद्धसेन दिवाकरादि प्राचार्योंने जो कुछ  
 होवेगा सो छव्य केनादि देगके करा होवेगा. उनकी  
 वत पार्वती बोल बोल करती हैं परंतु येह विचारी जैन  
 शास्त्रोंका क्या जानती है. हमारे तो शान्ताज्ञान मान  
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है. और जो लंस  
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्वा पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु  
 है. और जो पूर्वाचार्योंने लिखा है सो सर्व लोकनी  
 धर्मनीति, सोमनीति, कादवनीति, अर्हनीति, वारतुशा  
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोंके अनुसार लिखा है. जव्य जी  
 काँ अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममे दृढता आ  
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू  
 र्वाचार्योंके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा  
 र्योंने सावय्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन  
 चकं जो कोई सावय्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव  
 आचार्यकों पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुंतो कुगुरोकी वहकाइ होइ  
 इस वास्ते तुं सावय्य निरवय्यका स्वरूप नहीं जानती  
 सावय्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषकों क

ना है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है सो मावयोपदेश नहीं कहा जाता है. जेकरनुं शास्त्रकी लिपनकों मावय मानती है तो श्री चंद्रपणचि और मूर्य पद्मचि शास्त्रोंमें अठारवीस नक्षत्रोंके जोजन बहे है. इम नक्षत्रमें यह बस्तु खायकर जाये तो कार्य मिच्छ होय. तिनयें कितनेही नक्षत्रोंमें अन्नरु बस्तुयोंके जोजन लिखे है. अय इम पत्रने है यह जगजंतका कहना और गणेशगोंका गंधना मावय है वा नहीं? जेकर कहेंगी मावय है तब तो तेनुं जगजंतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शास्त्र मानय मिच्छ हो जायेगा. जेकर कहेंगी जगजंतने किमीको अन्नरु पानेकी आज्ञा तो नहीं दीनी तो तम पत्रने है. ऐसे ज्ञान कथन करनेमें जगजंतकों क्या ज्ञान हुआ? और शास्त्र माननेवालेको क्या ज्ञानदर्शन चाखिती बृहद् हू? इम वांचनेमें जिनाज्ञाका त्यागवना क्या मिच्छ हुआ? तथा इम पाठकों वांचकर जो कोउ पुरोंक नक्षत्रोंमें पुरोंक अन्नरु माकर अपना कार्य मिच्छ करेगा तब मध कर्षाकों क्या ज्ञान होयेगा? इम जगमें रहनेका यह है कि नें काणी इच्छणीकी तरे एक पायकीही बेनसीदा या जाननी है—जिन ग्रंथकों तथा मान लोषा सो पत्र हो गया और जिन शनिपाके जेय कर्षके आज्ञायोंके रणे ग्रंथकों मावय और निश्चक उद्गमवरीण. इम जगमें तुं नृगुणके शक्तों लोम्के किमी नृगुणकी सेवा कर जिम्मे को. मावय निम्नवरी पावर पम्.

और स्वरोदय शास्त्रोंमें जे पापद्वय लिखा है परंतु किमी शास्त्रमें नहीं लिखा है. इम पत्रने जेपय हुकमों पत्रने जेता चाखिण उद्गम तो कार्य करनयें क्या

नमस्ते, तस्मैना निषेधा न ती ते, जगा जेगा जगा, ते  
 जाल, जान होवे ते. नती जेगा जेगा या या तीं जेगा ही  
 वृत्ति होती है किमी जगे परमप्राप्तों नामी मर्णादि  
 रने परने है, किमी जगे जगनी मर्णादि नामी मर्णादि  
 रने परने है, किमी जगे जैनार्थी पञ्जातनाते व  
 मंत्रादि करने परने है, किमी जगे मर्णादि कर्मना म  
 निषेध है. सर्व शास्त्र उत्तमार्थादिक है. श्री धर्मोपा  
 र्थने तथा भिन्नमेन दिवाकरादि पाचार्योनि जो कुछ  
 होनेगा गो ज्ये कंत्रादि देगके करग होनेगा. उनकी  
 वत पार्वती बोल बोल करती है परंतु येह विचारी जे  
 शास्त्रोंको क्या जानती है. हमारे तो आमाड़ा मान  
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है. और जो लंग  
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्व पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु  
 है. और जो पूर्वाचार्योनि लिखा है सो सर्व लोकनी  
 धर्मनोति, सोमनाति, कादवनीति, अर्हचीति, वास्तुशा  
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोके अनुमार लिखा है ज्ये जी  
 को अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममें दृढता आ  
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू  
 चार्योके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा  
 र्योने सावद्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन  
 चके जो कोई सावद्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव  
 आचार्यको पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुंतो कुगुरोंकी वहकाइ होइ  
 इस वास्ते तुं सावद्य निरवद्यका स्वरूप नहीं जानती  
 सावद्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषको क

ता है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है  
 सो भावधोषदंश नहीं कहा जाता है, जेकरमें शास्त्रकी  
 लिखनकों भाव्य माननी है तो श्री चंद्रप्राज्ञि और अर्य  
 पञ्चि शास्त्रोंमें अष्टावीश नक्षत्रोंके ज्ञानन कहे है, इस  
 नक्षत्रमें यह यस्तु भाव्यरु जाये तो कार्य सिद्ध होवे, नि-  
 नये कितनेही नक्षत्रोंमें अक्षर यस्तुओंके ज्ञानन लिखे है,  
 अर्य हम पूछने है यह जगदंतका कहना और गणेशोंका  
 गंघना भाव्य है वा नहीं? जेकर कहंगी भाव्य है तब नां  
 तेनु जगदंतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शास्त्र  
 भाव्य सिद्ध हो जायगा, जेकर कहंगी जगदंतन किमोंको  
 अक्षर मानेकी आशा तो नहीं होती तो हम पूछने है,  
 अर्य ज्ञान कथन करनेमें जगदंतकी क्या आज्ञा हुआ ?  
 और शास्त्र वाचनेवालेकी क्या ज्ञानदर्शन चारित्र्यकी वृद्धि  
 हुई? हम वाचनेमें जिनाज्ञाता आशयना क्या सिद्ध हुआ ?  
 तब हम पाठकों वाचकर जो कोइ पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें पू-  
 जोंका अक्षर भाव्य अपना कार्य सिद्ध करंगी तब सब  
 कर्त्तव्यों क्या ज्ञान होयेगा? हम ज्ञानमें कानेका यस्तु है  
 कि तुं कर्त्तव्य दृष्टांतोंकी तरे एक पाठकोंकी देखनीया  
 या जाननी है—जिन ग्रंथकों तथा मान ज्ञोया सो मंग  
 हो गया और जिन ग्रंथोंके अर्थ कर्मके ज्ञानोंके अर्थ  
 ग्रंथको भाव्य और निरर्थक ग्रहनादर्शन, हम ज्ञानमें तुं  
 भ्रमोंके मंगको ग्रंथोंके किमी मन्त्रोंकी भेदा कर जिनमें  
 नके भाव्य निरवगती भाव्य परं.

और नगोदय भाव्यकी तुं भाव्यलिखा है परं  
 किमी भाव्यमें नहीं लिखा है, हम ऊंचे ज्ञानका तुं  
 ज्ञान हम ज्ञान चारित्र्य अक्षरों को वाचनी ज्ञानमें रना



उंमं साधु निम नदीकी उल्लंघके निद्रा ले आवे. ३ क-  
 ल्पसूत्रमें लिखा है योनी योनी संयती उंटे पन्नी होवे  
 तो म्वाविकल्पि साधु निद्रा ले आवे. ४ श्री जगन्नी-  
 जीमें कहा है श्री संयका कामपने तो साधुदायमें तजवार  
 लेके उंमा न्याकालमें जावे. ५ इत्यादि जनेक भाषाके पाठ  
 है जिनमें लिखा भवतु दीप पन्नी के तो फेर साधु या  
 पन्नेके चाम्ने हिमा को और श्रावक पदते चाम्ने हिमा न  
 करे यह समझ सुझोती है क्योंकि मान सज्जनिशोधमें  
 निमोदिन उकाते आलेको चाम्ने देवश्रीक जानेकः कल्प  
 कहा है. और मीमांसी पूजागत फल राज मन्वीय सूत्रमें  
 मोक्षका काय है. और फलोंमें पूजा करनेमें संस्कारका दान  
 होवे जैसा फल श्री भावश्यक सूत्रमें कहा है तो फेर नि-  
 गके निमोपनेमें कल्प्य संयती तज मिथ्या मीष्टियोंका  
 लक्षण है.

पृष्ठ २३ में पावेतो श्रुतकोने जो श्रुत लिखा है  
 सो पढ़ है.

श्रुत्यन्थानं करोतिपापं धर्मन्थानं विवर्जिततयाः  
 धर्मन्थानं करोतिपापं तज्जकन्म विवर्जिते ॥१॥

मथन तो यह श्रुत कहीन सुझोता नहीं है. और उंमं  
 पयवेतो लिख है. और निम पन्निने यह सोचो यह  
 तमी है मिथ्या मीमांसकी ज्यो श्रुतमें देवपनेमें साधु  
 मीमांसी है यह पार्वतीकी संयति करनेमें सुख मीमांसने  
 पन्नी मीमांसका फलको तमी है. पार्वतीको जो अक्षर  
 प्रान तो चैसा है और मीमांसका मः से चरु या-  
 शय करती है.



नहीं है. तो फिर पारिवर्तन जनतन्त्रादर्शक लेखकों जगन्म  
 क्यों लिखा है. क्योंकि जो गृहस्थ पढ़े हुए, धर्म अथुनि  
 रूपमें ग्रहणगा, हीनदीन कृपाण रहेगा निगमों तो योगदृष्टि  
 समग्रण शास्त्रमें सम्यक्तन्त्रों नहीं रहा है. जब यो हिनपु-  
 ष्यबाला गृहस्थ धर्मकार्यमें तो शास्त्रोक्त तब कथमें नहीं  
 प्रकनेगा तो निम दालिजी ग्रहस्थने दान नप पूजादि ध-  
 र्मकार्यही गया कर लेना है. और जगन्तीयादिक शास्त्रोंमें  
 जब जगन्त तथा ज्ञानार्थिकोंको बंदना करने वाले  
 गृहस्थ श्रावक गये है तब ऐसा कथन करा हैकि प्रथम  
 स्नान करा. पीछे देव पूजा करी पीछे बहूत लये संकलित  
 न्याजनाम पहिरके बंदना करनेको गण्येसा लिखा है.  
 परंतु पीछे, अथुनि, ज्ञान रहित, जर्षाबाले उमथिन पढ़े  
 हुए कथमें पहिरके बंदना करनेको गण्येसा तो नहीं लिखा  
 है. और जो पारिवर्तने दानिकेवल मुनिके धर्म करकोका दृष्टान  
 होया है तो अग्रुक्त है क्योंकि जनतन्त्रादर्शमें जो कथन है  
 तो प्रथम श्रावककी पढ़ेका है. निगमों माथुका दृष्टान देना  
 धर्मनाका काम है. पारिवर्तने लिखा हैकि कौंड पढ़े हुए  
 कथमें पहिरके पीछे पारिवर्तने निरुक्त मय भीना नहीं हो-  
 वेना. उचर-को पीछे लपने प्रथममें मोगीही जीवन एव  
 प्रमेय धर्मके पीछे पारिवर्तने नोनहा मय भीना होवेना के  
 नहीं. केकर होवेगा तब तो दुष्टक श्रावककी प्रथोक करी-  
 रमें सामाधिक पोष्य करेगे पर तो हिनकोही बन्त हो-  
 वेना तो और श्राव नि तो एव्य दृष्टी पंक्ति ७ में लिखा  
 है 'अथुनि मय प्रथम करके सामाधिक करे उमका वरा  
 निमित्त है. और तब तब अथुनि प्रथमका पर तो उमोकी  
 मयथ अथुनि होना चाहे. पर तो बिना दान वेही नहीं

शकता है क्योंकि रात्रको स्त्री संगदि करेगा तो प्रातःक  
फेर स्नान करके शुद्ध होके फेर शुचि वस्त्र पहरेना होके  
पार्वती विचारी कहीं कहीं यथार्थभी लिखती है प  
क्या करे दुंदक मतानुसार तिसकों कहीं कहीं मलीनता  
जी पसंद करना पमता है.

पृष्ठ ४० मे मे सामायिक पूजामें जो विरोध लिखा है  
सोची वृथा है क्योंकि सामायिकमें छव्यपूजा करनेका  
श्रावकको निषेध है और निर्धन श्रावक जो सामायिक  
करनी गोमके छव्यपूजा करे तिसका कारण यह है कि  
निर्धनकों पूजा करनेकी सामग्री मिलनी उर्लज है. और  
सामायिक तो जब चाहे तब कर सकता है. इत्यादिक सर्व  
जैनतत्वादर्श में लिखा है

और जो मकमीके जाले उतारणे वावत लिखा है.  
सो सत्य है जैन शास्त्रमें ऐसाही लेख है, परंतु जो  
लिखा है कि श्वेत रंगके मकमीके जालेमें अनेक अंमे  
है वे तत्काल मरजावेंगे यह सर्व पार्वतीने मिथ्यात्वके  
दयमे झूठा लिखा है क्योंकि जैन तत्वादर्शमें श्वेत रं  
अंमेवाले जालेका लेखही नहीं है. जो लिखती है "ज  
उतार गेरे तो यत्नही काहेका है?" उत्तर-शास्त्रमे लि  
है जब माधु नदी उतरे तब यत्नमे उतरे; जब कचे प  
णोमे पग रस दीया तब त्रमथावर अनंत जीव तो मा  
दीप फेर यत्न काहेका दुआ विचार कर पार्वती !

पृष्ठ ४१ में पार्वती तीन प्रकारकी पूजामें दूषण लिगत  
है मोती इमकी मूर्पना है क्यों कि जैनशास्त्रोंमें जगंत  
श्रावककों तीन प्रकारकी पूजा करनी कही है. और जिन  
पूजाओं जो विशेष फल है मोती कहा है. इम्मं इन ति

















श्री शंभुजय तीर्थस्त्री यात्रा करने वाले इच्छित देवताओं वि-  
हार करा नर पापमर मुदि १० के दिन हांतीने फे  
तीन कोशके अनेक नामसे मुद्रणा नुनार्गथी. उन तिनोसे  
गुनगर्वायोका भाचुकाग कही देखाया. यह बात पंजाबके  
सबे जन्मजन जानते है.

श्रीर पार्वती श्री आन्यागमजीरे जन्म गहन गन्दाय  
गुनगर्वाी भावकोको मृनके अर्थात्जने कसे नज्जी है ?  
उम पार्वतीने पूरे जन्ममें जेसरी कर्म करेथे जिनसे उसके  
सबक पैगाल, भेले, कनेले, जयां सजाया कर्मा होत थी  
तिर्यावाले हू, है, उनसे श्री आन्यागमजीगत क्या होत है-  
श्रीर जो पार्वती लिखता है 'आन्यागम गुनगर्वाने एक  
किता है.' फेर पृष्ठ ७३ में लिखती है कि आन्यागमजीने  
जैनव्याख्यामें पतंजराय श्रीर गणदण्ड ने कहे हैं किने  
कीने है लिखा है इस आन्यागम मेंलिता लिखा है. यह  
पार्वती लिखती थी जादिया गन्दाय गुनगर्वाी हूअ  
होगा है.

पृष्ठ १० में लिखत पृष्ठ १०५ तक जो भाग लिखते है  
विनया नुनय लिखते आरभ लोक लिखतीलिखती एना  
रगने है श्रीर लिखतेमें, उद्वग्ना मानते है की कसेकी कस्त-  
याताजी मुनके कर्मा आ उगमा भावतोके गुन गुनगर्वाति  
पुनेसके है पूरा पदज होय ३ जन्मगुनगर्वाये आदर  
पुनेसके है पूरा कस्तया २ पदकी उद्वग्ना है का जरीपु  
१०५ है उद्वग्नाये उद्वग्नाये कसे कसेलिता कस्त ३ लि-  
खत गुनगर्वा श्रीरान कस्त ३ गुनगर्वालिखत का लिखत उद्व-  
५ उद्वग्नालिखत उद्वग्ना ३ गुनगर्वाये कस्त ३ गुनगर्वा  
लिखत उद्वग्नाये उद्वग्नाये कस्त ३ उद्वग्नाये उद्वग्नाये

लित विस्तरा १० शांतिसूरिकृत चैखवंदन बृहद्ज्ञाप्य  
 श्री देवेंद्रसूरिकृत लघु चैखवंदन ज्ञाप्य ११ श्री धर्मयो  
 कृत संवाचार वृत्ति १३ संघदास गणिकृत व्यवहारः  
 १४ बृहत्कल्प ज्ञाप्य १५ श्री मलयगिरिसूरिकृत  
 १६-१७ हेमचंद्राचार्यकृत योगशास्त्र १८ पूर्वधर सं  
 गणिकृमा श्रमण धर्ममेनगणिकृत प्रथमानुयोग १९ हेम  
 सूरिकृत त्रैलोक्य श्लोका पुरुष चरित २० पूर्व चिंतन  
 कृत श्राद्ध दिनकृत मंत्र २१ श्री वर्द्धमान सरिकृत ज्ञा  
 दिनकर २२ श्री रत्नशेखरसूरिकृत श्राद्ध विधी कौमुदी  
 ज्ञाचार प्रदीप २४ उमास्वानिकृत श्रावक पत्राति २५  
 सृष्टि विरचित नव पद प्रकरण २६ जिन जज्ञगणित  
 श्रमण विरचित विज्ञेपावश्यक २७ शब्दांज्ञानिधि महा  
 पत्राति २८ श्री महावीर जगन्तका शिष्य, चौदह  
 शर्मा, तीन ज्ञानका भरता श्री धर्मदासगणिकृमा श  
 रिश्रिता उपदेशमाला २९ पञ्चशरी हेमचंद्रसूरिकृत  
 ३० श्री जगन्नाथसामिकृत व्यावश्यक निर्गुति  
 श्री जगन्नाथसामिकृत पञ्चाक्षर वृत्ति ३१ पारुशक रचित  
 श्री जगन्नाथ ३२ श्री जगन्नाथसामिकृत श्री राजश्रीश  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३३ श्री महापद्मसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३४ श्री देवसूरिसामिकृत, सामिक  
 श्री जगन्नाथसामिकृत, श्री जगन्नाथसामिकृत, श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३५ श्री जगन्नाथसामिकृत ३६ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३७ श्री जगन्नाथसामिकृत ३८ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ३९ श्री जगन्नाथसामिकृत ४० श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४१ श्री जगन्नाथसामिकृत ४२ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४३ श्री जगन्नाथसामिकृत ४४ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४५ श्री जगन्नाथसामिकृत ४६ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४७ श्री जगन्नाथसामिकृत ४८ श्री जगन्नाथसामिकृत  
 श्री जगन्नाथसामिकृत ४९ श्री जगन्नाथसामिकृत ५० श्री जगन्नाथसामिकृत

पुत्रों को मानेगी न्यायो पुत्र्य तो उनका एक वचन मानेगा.

जिन शास्त्रोंके श्रावण तो जिन मंदिर, जिन मन्दिना तरे बनवाने है, और जिन तरे पुजने है, और जिन चार निद्रेष मानने है, जिन तरे अथवा मानने है, जिन तरे अपने सुत्त्योंको उपास करके लाते है, तो पुरोहित संख्यानमान करते है.

पृष्ठ ७६ में मेलिपती है कि "वृषारं गुण्यो ज्ञानेयानि जेगी अर्थानि ब्रह्मे वजाने है इत्यादि" उपास-अमर्षी-देवताने संखन १७/२७ में अमर्षमर्षे राज कथा उ-के मुन्दे उपर जिननेही उपास देवक भाषरने मरे है उपासि एमे ये जेमे जिनमेक वमार, देव, मरे, जी, नार किमे उमे किन्ने : तो एमे अमर्षमर्षी मे अथिक मक्षिमा है नया अमर्षमर्षी देवक मे अमर्षी लक्ष्मीमे अथ वराथा तो एमे तो मरे अथवा अनाथ एमर्षी उपसे वापदादेके मुन्देकी जना मर्षे है तो एमे अमर्षमर्षी देवककी जना अथिक मर्षिमा है नया मुन्दे मुन्देके जामे पाजे जी तो म-मर्षान लक्ष्मीमे ही वनाए विवेमे एमे पाजे एमने पाजे मे अनाथ : मीच मर्षीमा ना मर्षे है नया अमर्षमर्षी म मुण देवकीमे मर अथवा लीलीमे ए लीलीमे तो एमने माल और अलीलीमे ही वनाए होसि एमे एमे तो एमे मीच मर्षीमे ना मर्षी है मर तो म्दिना जेनेयानि मु-वापदे वरा मर्षीमा मर्षीमा है तो मर अथवा म्दिना मर्षेके देव मर्षे मर्षीमे म्दिना मर्षीमे तो मर्षीमा. मर्षी मर्षीमे मर्षीमे "मर्षीमे मर्षीमे एमनेके मर्षीमे मर्षीमे"

...के ...  
 ...के ...  
 ...के ...  
 ...के ...  
 ...के ...

परिणत हमको उन मानेवालों को मयायका मान मानते है.

उत्तरपक्ष हे मया मत्वियों! मरते पागे राजे राजा नेमे संसार जाता मानते हो तो जीते हुंढकांके अपि वाजे नजवानेमें तुमारे-मगारका जाता कहां नष्टहो जाता हैकि तुम इस वगत नहीं नजवाते हो. देमो इन हुंढकोही मठना! जीते हुंढक आगेतां वाजे नहीं नजवाते है और मरे हुए हुंढकके आगे वाजे नजवाते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोशजे गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुगसे कहते है ह-म तो जावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वनजाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार साता कहते हो उसमे असल बात तो यह हैकि तुम करतेतो ही अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसे और जिनप्रतिमा के छेपसे मृपावाद बोलके संसारका खाता कहते हो. हमारे तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्सवसे नगरमे लावना, इसमें जिनधर्मकी प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है " ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है " यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुख आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ

न्यायपत्रिका में पूर्व जन्मका पापके प्रत्याहर्ष में सुखत्याग पायी  
 शंभु लोनीथी, जब जिन मन के शास्त्रोंमें सुख पायी विरह  
 जानी तब सोलनेगी, दुःखगर्भोंकी जो सुख पायी उनगते  
 में सो उनलोंने दुःखगर्भोंके फलमें निहालने है और सुखी  
 होने है, और जो सुख बांधा जाता है सो गाय, बैल, घोड़े  
 प्रमुख पशुओंका बांधा जाता है परंतु नया सुख नो सुख  
 नहीं बांध सकते है, पारसी लिखनी है कि " सुख बांधके  
 फलमें राजा नो कोट घरमा पाया जाता है, सब काम क-  
 रना प्रति दूसर है, सबका नहीं कर सकता है " दुःख इ-  
 म जन्ममेंनी जो पीडा नाक रुपाके जन्म सुख राजा करने  
 फीरे निगतां है मज्जाधनी मदनवी शंभुगी कर्माणि पैसा  
 काम करना प्रति दूसर है, पैसा कामकीनो कोटही कर  
 सकता है, सब काम नया पायी बांधके, पोरना प्रति पैसा  
 करना सोने करिगे है क्योंकि नया सुख बांधके दिवना  
 निहालने प्रति है सो सब पाये करने नया नहीं है  
 और सुखपायी बांधनी पीडाके नया निगती है सो नया  
 सुख मज्जाधनी प्रति सोने सुख बांधे निगती निगते  
 है सो नया सुखो जोत तेन माये सा सुखी जानने है ?  
 जानने है.

पूर्व पाप में बांधनी लिखनी है " जो नया सुखपायी-  
 न निगते है सो नया सुखपायी नया नहीं है. " सुख-  
 धरे सुखपायी सुखपायी सो नया निगते है सो सब निगते  
 क्योंकि नया सुखपायी सोने सुखपायी ही नया निगते  
 है, निगतां ही सुखपायी निगते नया नया नया नया  
 सुखपायी सुखपायी नया नया सुखपायी निगते है,  
 नया ही लिखनी है " सुखपायी सुखपायी सुखपायी

वजवाते है परंतु हमधर्म तो नहि मानते है.” उत्तर-जब आरासिंहादि हुंढकोके मुरदे आगे वाजे वजवाते है जंकर निनेमे तुमारे गुरुयांकी महिमा नही तो क्या तुमारे श्रावकों पुत्र पुत्रीका विवाह मुकलावा हो रहाथा कि जिस. वासे वाजे वजवाते है ?

पूर्वपक्ष—हमतो उन वाजेगाजों को संसारका खाता मानते है.

उत्तरपक्ष—हे मुग्ध मतियो! मुरदे आगे वाजे वजवानेमें संसार खाता मानते हो तो जीते हुंढकांके आगे वाजे वजवानेमें तुमारे संसारका खातां कहां नष्टहो जाता हैकि तुम इस वखत नहीं वजवाते हो. देखो इन हुंढकोकी मढता! जीते हुंढक आगेतो वाजे नहीं वजवाते है और मरे हुए हुंढकके आगे वाजे वजवाते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोशाले गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुखसें कहते है हम तो ज्ञावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वतलाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार खाता कहते हो उसमे असल बात तो यह हैकि तुम करतेतो हो अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसें और जिनप्रतिमा के छेपसें मृपावाद बोलके संसारका खाता कहते हो. हमार तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्तमवमें नगरमें लावना, इसमे जिनधर्मकी प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है “ ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है ” यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुग्ध आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ-

प्रायःमर्जादि पूर्ण जन्मदा पापके मन्त्रावर्गें मुखसागें पाटी  
 अथ लोभीषी, जय मन यत के माग्योमें मुख पाटी लिख  
 आनी नव पांडुरोगी, दुग्धसांघी जो मुख पाटी उतारने  
 सो उनहीतो दुग्धसांघी फंदमें निवालेने है और एभी  
 रोने है. और जो मुख सांघा जाता है सो गाय, बैल, घोमें  
 एकर पशुयोका सांघा जाता है परंन नद्या पुण्य तो मुख  
 इहाँ सांघ रखने है. पाटीकी लिखनी है कि " मुख सांघके  
 फेसनेवाला जो कोइ इच्छा पाया जाता है, एकर साध क-  
 रना अति दुकर है. अन्क मही कर नकरना है. " मुखर  
 उतार करनमेतो जो कोइ नाक कटाये और मुख काला करके  
 औरे निषको में सदायको माननी सोभी अयोके फेसा  
 तब फरना अति दुकर है. ऐसा करकनीको कोइरी कर  
 करना है. मुख अंगे नद्या पाटी सांघने फोरना और एसा  
 करना रोने मरिगे है. अयोके नद्या मुख सांघके फेरना  
 जिनाइते अतिर है सो मुख गाले करने अत्य ही है.  
 और मुखपाटी सांघनी पीजानने अने लिखनी है जो गया  
 एकर मध्य मंगले अति सोभी मुख सांघ दिनाली लिखने  
 है सो गया उरवी लोक विन काने साध नही मानने है  
 जानने है.

पुत्र रूप के पाटीकी लिखनी है " जो अने फेसावनी-  
 ने लिखा है सो अने नरनाकर मरली नही है. " मुखर-  
 अयोके माधवात जो अत्य लिखा है सो अत्य लिखा  
 अयोके साथ साधने सो अत्यपाके सो अत्य लिखि  
 है. लिखनीके अन्कअपानु लिखना करके अने अने  
 रोने अत्य ही अत्य ही अत्य ही अत्य ही लिखने है.  
 पाटीकी लिखनी है " अन्क अत्य है अत्य ही अत्य ही

कागनेने निग्या है निग्या हो मःअन्धनतमें जन्म लनगी है नगनमे कतना है। "विधिगी नों पय तः मोंगी है कि पाहाश गिर पमेना नों मे चुगहो थान लेउंगी" ऐमे यह पार्वती जी हुंढक मनके थानने नामो चुग कर्मी है और महागनियोके रने गायांकों गुग उहगनी है। हम पू उते है कि वत्तीग मुनामें किभी जगे ऐगा लोग है। कि "अविरती गुणठाणेवाला परस्त्रीमे व्यभिचार नहीं हगा है और परस्त्री सेवनेवालेहो सम्यक्त नहीं जाता है" ऐमा पाठ तो सुत्रोंमें नहीं है, तो फेर मदांय होकर तैने आवश्कके लेखकों केमे जुग उहराया !

विचार कर ! के जंघुआदि नगरोंमें तेरी दृष्टीमे दृष्टी लगाके तेरा व्याख्यान मुननेवाले मुख्य हुंढक श्रावकथे सो वमे व्यभिचारी मुनानेमें आए है. जववे तेरेकों वंदना कर तैथे तव तुं कहतीथी "श्रावकजी दया पालो." उन विर रोने क्या जाने कितनी परस्त्रीयो और वेडयायोकी अं सन्मुखिम जीवांकी दया पाली होवेगी. इसतरे. तेरे मुख श्रावक तो पांचमे गुणठाणे चाहो कैसाही कुकर्म करे अं श्री जगवंतका जक्त, अविरती सम्यग दृष्टी गुणठाणेवाले सखकीकों परस्त्री सेवनेसे तुने पूर्वधर आचार्योंका कथ जुग उहराया सो कैसि मर्खताकी बात है ?

इस सखकीकी उत्पत्ति ठाणांगके नवमे ठाणेमे कह है और मूल पाठमे मोक्ष जानेवाला कहा है परंतु. मतांध को शास्त्रनी नहीं दीखता है. एह पार्वती उम सखकीकों प्रतिमा पूजनेवाला वांचके उसकी वहुत निंदा लिखती है परंतु जेकर सो सखकी-मतसे गुदा, मुहपत्ती, जाली, पछे उर सीर धोनेवाले, सन्मुखिम पथी मुह वंयोका जक्तथा,

यौन विन मनिमाका निदकथा, ऐसा जेप होना तो वि-  
मर्त्ता बांनके पावेनीका नैम नैम कपिन होना यौन निद्रा  
न करती परंतु क्या को विनागी ! ऐसा जेप तो जैम  
शास्त्रमें है नहीं.

एन मन्दीरिकायामें जो पद्मावली कुशुकी लिखी है.  
सो मने कुशुकीकी पावे लिखी है. यों कि चार मने वर्षके  
पावेकी एन पद्मावलीको निररत नहि है. यौन जो जो नाम  
पद्मावलीमें लिखा है तिनमेंमें किमीने कोइ प्रेय नचा हुआ  
होए सो लिखिजात. तिनमें एन नामकी मनीन सोके नहीं  
सो लिखित नाम पावक. लिखनेमें तो पद्मावली मधी नहीं  
तो मानी है.

एन मन्दीरिकायामें जो जेप है कुममें जो जैम प्रेया-  
नकार भेद है सो तो मने है. यौन तो एनमें एनकी कल्प  
नामें लिखा है सो एनकी मपायानक है. एनके मधको कल  
लिखनेकी मपायानका नहीं है.

अथ मन्दीरिकाके दुसरे नामकी थोड़ीसी  
माया लिखने है.

१. १७ १०० में एन मधुमेय मधुमेय नाम मयाण  
के लिखा है सो मया.
२. १७ १०० में मयाण के नामके जयचरे माया नि  
लिखी मया.
३. १७ १०० में मयाणकी मधुमेय कुशुकी एन  
मया के लिखा है सो मया.
४. १७ १०० में मयाणकी मधुमेय कुशुकी एन  
मया के लिखा है सो मया.



कर्मणा जिम्मा है नो गण्य.

२१. माहात्म्यमण्डले में दो लोमम्भका ध्यान करणा जिम्मा है मां गण्य.

अर्थात्क बहुत गण्य जिम्मा है परन्तु हमने यह देखे । दोनके भयमें यह उपर जिम्मा हूँ २१. गण्य जन्म विषयकी बल्लभ होनेके लिये जिम्मा है. नो देय लेनी. न ये २१. गण्य नहीं होवेना बर्जीग मृशोसमें जिस जिम्मा कि पाठमें जिम्मा होवेना पाठ दिग्मायो--जेकर नहीं जाये नो करदोकि हमारा पंथही पिप्ययान मुक्तक है ए- १ नूठ धोत्राने लोम जिम्मानेमें क्या दोष है ?

पूर्वपक्ष--यस पारसी दंडवणीने पंजी पंजी गण्य जि- १ नो गया हमके पाननाका का नहीं है !

उत्तर--इसके लिये उत्तरमें नो पंजाही मान्य होनाई. पूर्व-ज्ञानहीपितामें पंजा जिम्मा हैकि "लम्बका लम्ब- कुमान न दोने. भावादिवासी जात व्यष्टी न होवे. त्रिधा न होजा न होवे. लम्बका बहुत लोश न होवे, बहुत न होवे, मोलता न होवे, योगेता का जिम्मा आजा- न होवे, हमारे दोहा देवेना इत्यदि निर्दोष." यथावा विम श्रुतिमें देवा नहीं ?

उत्तर--यस उपर जिम्मा हूँ जानां बर्जीग मृशोकि न पाठमें नो कोहनी जमे नहीं है, लोम जिम्मा पद्यानमें है । इस मुद्वेरीके मयाए नहीं है.

द्वि-मुद्वेरी नो नहीं है इमेक शब्दमें नो है ।

उत्तर--जना पृथी विचार करोकि नो हमन हू- १ नहीं नहीं मां कपन हमनेमें कर्तामें आया है यथा विन्वाही १२ देदे देदे शंभे नैमा हुआ.

प्प्रचूयस्सः जलजञ्चस्थलजञ्च जल  
 स्थलजं जलजं पद्मादि स्थलजंविचकि  
 लादि चास्वरं देदीप्यमानं प्रचूतमतिप्र  
 चुरःततःकर्मधारयः चास्वरञ्चतत् प्रचूतं  
 च चास्वरप्रचूतं जलजस्थलजंचतत् चा  
 स्वर प्रचूतंच जलजस्थलज चास्वर प्र  
 चूतं तस्य घुनःकथंचूतस्येत्याह—वेणुग  
 इस्सः वृन्तेनाधोवर्तिनातिष्ठत्येवंशिलंवृ  
 न्तस्थाथितस्य वृन्तस्थाथिनः वृन्तमधो  
 चागे उपरि पत्राणीत्येवं स्थानशीलमस्ये  
 त्यर्थः दसध्वणस्स दशानामर्ध पञ्चवर्ण  
 म्येतिचावः ( इत्वं चूतस्य कुसुमजातस्य  
 वर्णं वर्षतेत्यर्थः )

नापाः— गजके नांश्च उपशांत करो, करके जलम्य  
 के चत्पत्र हूण फल, जल के उत्पन्न हूण कमलादि औ  
 स्थानके चत्पत्र हूण विचिकित्तादि अर्थात् जाइ जइ इ  
 यार्दि पांच वर्णोंके फुलकी जानु ( गोमे ) प्रमाण वा  
 क्को अर्थात्क मुग्धियान देवने अपने अनियोगिक चाक  
 नेरमा पाजादी तत्र वा अनियोगीक देवता मह आइ  
 इत्वं इत्त एव गुणा द्वारा श्रीग वैक्रिय कृत्वि करके ज



अपिय-चमिञ्चनवोअणंतो तुहआणा ।  
 हिएहिंजीवेहिं । पुण चमियवो तेहिं जे  
 नंगीकया आणा ॥१॥

अस्यार्थः—हे ऋगवन् जिनप्राणीयोंने तेरी आज्ञा  
 राधन करी है वे प्राणी इस संसारमें अनन्त न्यक्ले  
 फेरनी जिनप्राणीयोंने हे ऋगवन् तेरी आज्ञा अंगी  
 नहीं करी है वे प्राणी इस संसारमें रुलेंगे।

तथाच—

जो न कुणइ तुहआणं, सो आणं कुण  
 तिहुअणजणस्स । जोपुणकुणइ जिणाणं  
 तस्साणा तिहुणेचेव ॥३॥

अस्यार्थः—हे ऋगवान् जो माणस तेरी आज्ञा न  
 करता है तिन पुरुषोंको तिन लोककी आणा करनी प  
 है. और जो पुरुष जिनेश्वर ऋगवान्की आणा अंगीका  
 करे है उस पुरुषकी आणा तीनलोक मानते है. क्योंकि  
 आखीरमें ऋगवानकी आणा अंगीकार करनेसे वंही प  
 दकी प्राप्ति होगी, तब उस पुरुषकी आणाती तीन लोक  
 अंगीकार करेगे यहनिःसंदेह जाणना. इस वास्ते जो  
 जो ऋगवान्ने कथन करा है सांसो सर्वही प्राणीयोंमें  
 अंगीकार करनी चाहिये.

और यह जो कितनेक मानते है कि “ऋगवंतकी प  
 जायें केवल हिमाही होती है” वो उनलोकांकी समझमें  
 फरक है—

। जगवान् ऐसा उपदेशाती नहीं देने, उस धाम्ने मनमें  
 नाशों शंका जो जगवान् पढ़ावाजन कथन कन है ना  
 व करके मानना चाहीण, यीर रुदायिन शंका एम जोवे  
 । यह महाराजके पुत्रमें ब्याथ्य गुजामा काना चाहीण,  
 कनु मेम नहीं कनार्क जो ब्याधीजीने कन मरु वा सुठ  
 । एते लुप करण, नयोति निगदी टोके जवनक मया-  
 लका न्याथ निर्णय नहीं करेय नय नय खान्नाका क-  
 थाण होना उचन है.

पुत्रेद—पार्लोने जिगा क्षेति खपने क्षेत्रमें माप  
 पाथी जिग क्षेत्रों विहार को उत क्षेत्रक श्रावकोंको  
 निती प्रादिकमे मपर देवे के लपके माथु तथा मयामती-  
 नीने एमके दिन गुहारे क्षेत्रों विहार यानी पदुचनेकी  
 थना गरी है, जोर एमहा जय माथु तथा मागी जयने  
 क्षेत्रमे तिन क्षेत्रमें यथो यानि एते जो उत क्षेत्राले  
 यामकोंको मपर देवे, एसादि एत यह कथन यचीम पा-  
 र्थमें ही है नहीं यौर एमने जिगा है जो कदांमे नशाके  
 लिन्या है ।

उत्तर—एत यात्र में उत जिगनेवाजीकीने पुत्रों  
 किने नहामि यह सत मवाद है ।

पुत्रे—जो जीने के एत कथन यचीम सुधमें जो नहो  
 है एते, जन्मके निधिग में एतनी बुद्धिमें नहसीष्ट

उत्तर—जो कथन एतमें एते एतमें एते जो एत-  
 कथनमें लिखना यह निर्णयों मागीका माक है, एत एत  
 एतमें है एतमें एतमें मागीके मागे मागे निध एतमें  
 जो है एतमें एतमें एतमें जिगने है, जोर एतमें जो  
 जिगने एतमें एतमें एतमें एतमें है जो एतमें एतमें



दर्शन करने। अमृत्यु प्राप्त होना है। और यहाँमें  
 का शक्ति और ज्ञान (आध्यात्मिक) में साधु श्रीके दर्शन  
 श्रीनगर, पद्माराज श्री देवनागरी स्वामीके दर्शन क  
 गुरु श्री. सुधा, श्रीमती, श्रीमती, बदनाम शक्ति और  
 श्रीमि पिताका मुदा संतोकावापने जीपणकार, लक्षण  
 धर्म विमोके कार्य गिने अंदाजमें करीब चार हजार  
 है। और कहते हैं कि अथवा इस वादका विचार, दो  
 मरणीय अथवा अथवा है धर्म है धर्मका काममें पैसा  
 चनेताके मुदा आवश्यकता, एकमें पैसा पिता नोनी मया  
 है। इस इस वादको ज्ञानमाली गिनके धर्मवाद देने है  
 एकमें काममें किन्ति नहीं है किन्तु पैसों अथवा का-  
 ममानेमें किन्ति है। पैसा अथवाकाज करना नहीं है अथवा  
 किन्ति अथवा अथवा ही नहीं है।"

यह उपन्यास जेग वाचक मुदा धर्मको विचार क-  
 ता आदीय कि जगवान तथा दिनमलिधा और जेन वि-  
 की वाचा जानेको तथा दर्शनको ना बनाइ करनी और  
 उनके धर्म जगवाने किन्ति जगवाने यह किन्ति अथवा पु-  
 योग नथवा है। और जेग में जेग करनी कि "वादा  
 माने नहीं करवाते है" तो किन्ति अथवा जेग वाचने यह  
 अथवा नथवा जेग अथवा वादा वरु नहीं करनी। अथवा यह  
 अथवा जेग है कि "अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा  
 अथवा, अथवा तो अथवा अथवा यह अथवा वादा अथवा  
 अथवा, अथवा अथवा तो यह किन्ति अथवा के अथवा अथवा अथवा  
 अथवा अथवा अथवा" अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा  
 अथवा अथवा, अथवा अथवा के अथवा अथवा के "अथवा अथवा अथवा  
 अथवा अथवा तो अथवा अथवा अथवा अथवा" तो अथवा अथवा अथवा

उत्तरपक्ष—यह क्रिया करनेवालेकों जो फलकी प्राप्ति होती है सो नीच लिखे हुए दृष्टांतोंसे जान लेवे. तथाहि:

१ श्री जिन प्रतिमाजीकी भक्ति करनेसे श्री शांतिनाथजीके जावने तीर्थकर गोत्र बांधा यह कथन श्री प्रथमानुयोगमें है.

२ श्री जिन प्रतिमाजीकी पूजा करनेसे सम्यक्त शुद्ध होता है यह कथन श्री आचारांगजी सूत्रकी निर्युक्तिमें है.

३ “थशुशु मंगलं” अर्थात् स्थापनाकी स्तुति करनेसे जीव सुलज्जबोधि होता है. यह कथन श्री उत्तराध्ययनमें है.

४ जिन भक्ति करनेसे जीव तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन श्री ज्ञातासूत्रमें है.

५ जिन प्रतिमाकी पुष्पकी पूजासे संसार क्षय होजाता है. यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

६ सर्व लोकमें जितनी अरिहंतकी प्रतिमा है उनका कायोत्सर्ग माधु और श्रावक दोनोही बोधवोजके लानके नास्ते करे यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

७ श्री जिनेश्वर जगवानका मंदीर बनावनेवाला वाग्मे देवलोकतक जाये यह कथन श्री महानिशीथ सूत्रमें है.

८ श्रेणिकराजाने जिन प्रतिमाके ध्यानमें तीर्थकर गोत्र पाया यह कथन श्री योग शास्त्रमें है.

९ श्री गुणवर्म राजाके मतारा १७ पुत्राने मतारा प्रसारमें एक एक प्रकारमें जिनेश्वर जगवानकी पूजा करी है, और चतुस्रमें चतुसी तरमें मोक्ष प्राप्त हुए हैं. यह कथन



अब मुझजनोंको विचारना चाहिए कि ऐसों ऐसों प्रसक्त शास्त्रोंके पाठ जो न माने और जोले जीवोंको फंदमें फसावे उनसे ज्यादा और ज़ारे कर्मी जीव कौन है? अवन्नव्य प्राणीयोंको हम अपने मनमें करुणा ल्याकर हित शिक्षारूपो दो बातों लिखते है कि तुम पक्षपात ठोमके यह हमारा लेख और तुमारी गुरणी तथा गुरुओंका कथन दोनोंही शास्त्रोंके साथ मिलावो और सखासत्यका निर्णय करो क्योंकि इस मनुष्य जन्मका सार एहीहै कि जितना अपनेसे बने उतना धर्म करना पक्षपातमें पमकर क्या ले जावोंगे. इस वास्ते पक्षपात ठोमकर सखासत्यका निर्णय करो जिससे यह मनुष्य जन्म फलीभूत होवे. नहीं तो जैसे आये वैसेही कर्मबंधन करके चले जावोंगे.

इस पार्वतीने जो २१ इक्कीस प्रकारके पाणी आचारंग सूत्रके अनुसार लिखे है सोजी जुठे और स्वकपोळ कल्पित लिखे है. क्योंकि आचारांग सूत्रमेंतो नीचे मजिब लिखे है—

पीडोका धोवण १ अरणीका धोवण २ चावलोंका धोवण ३ तिलोंका धोवण ४ तुसका धोवण ५ जवोंका धोवण ६ ओसामण ७ आनलि (कांजी) ८ उप्न पाणी (गर्म पाणी) ९ आंवका धोवण १० अंवाम्कका धोवण ११ कवडका धोवण १२ विजोरेका धोवण १३ द्राक्षका धोवण १४ दामिम (अनार)का धोवण १५ सजुरका धोवण १६ श्रोफळका धोवण १७ कैरका धोवण १८ वेरका धोवण १९ आवन्नका धोवण २० ओर अंबलीका धोवण २१ एत उगीम प्रकारके पाणी श्री आचारांग सूत्रमें लिखे है— प्राण पार्वती दृग दहिने नामेका धोवण जिनपा



चाल, आलु प्रमुख रांधते और खाते है. आचारजी मे है, और खाते है. यहतो होनाही असंभव है कि कों आदिककों लूण लगाके धूप लगानेमें अधिक पाप है. अधि उपर रांधने भुर्था करनेमें अल्प पाप है. और हं साधु साध्वीजी वैगण, कंदमूल आचारादि खाते हैं, प तीके लिखने मुजिव जे कर इनकी परलोकमें ऐसी गति वेगी तव तो एह विचारे बहुत वेदना जोगेने. यहतो हं नहीं सकता हैकि मांसके रांधनेवाले तलनेवाले और भं सेकनेवालेतो नरक जावेंगे और खानेवाले नहीं जावेंगे. अपि जैनमतके शास्त्रोंमें वैगण, कंदमूळ मदिरा मांसादि वाचीश, अन्नक्षय वस्तु है अर्थात् खाने योग्य नहीं है, लिखा है. परंतु वैगण, होलां, सिंघामे, कंदमूळ, गऊ दी, मुली, गाजर, करेले आदि पर्वोक्त रीतीमें खावें रकमें जावे ऐसा नहीं लिखा है. इस वास्ते श्रीमती प हुंदकणीकों अपने माने वत्तीस शास्त्रोंके मुळपाठमें प ज्ञानदीपिकाका लेख दिखलाना चाहिए. नहींतो सुर्वी लिखनेका दंभ लेना चाहिये.

तथा इस पार्वतीने जो अपनी पट्टावली लिखी नी स्वकपोल कल्पित लिखी है क्योंकि श्री नंदीजी सत्तावीसमे पाठ उपर देवाधि गणिक्रमा श्रमण लि और उनमें पहिले ठब्बीश आचार्योंके नामजी लि अपर्गमिह हुंदकके परुदाद गुरु अमोलकचंद हुंदकने व टाथकी लिगी हुंदकपट्टावलीमें जो देवांथ गणिक्रमाः तरुमनाइम पाठके नाम लिगे है तिनमेंमें कितनेही नाम नंदीमुत्रके पाठोंमें विरुद्ध लिगे है. और पार्वती देवाधि गणिक्रमाश्रमण तक सत्ताइस पाठ लिगे है ।

चिनमैही पादोंके नाम नदीमूत्रके नामोंमें न्याय प्रमोजक-  
 वंद हुंदकके त्रिषे नामोंमें विरुद्ध है तथा लौकिके देवांक  
 गीगा क्रमाक्रमण तक बर्चाम पादोंके नाम त्रिषे है उसमें  
 नदीमपको, अमोजकनंद हुंदकके लीन पार्वती हुंदकणीकि  
 त्रिषे पादोंमें चिनमैही विरुद्ध नाम है सो जल्य प्राणी-  
 योंके जागनेके समे नद्यो न्यारोही पद्मजलीयां लिखते हैं.

नदीनी मूत्रकी पद्म  
 वनी.

- १ श्री सुभमेन्वामी
- २ श्री संवृषामी
- ३ श्री मन्मथरानी
- ४ सप्तशरती
- ५ प्रमोजकवर्षाणी
- ६ कर्मावर्षाणी नद्यपद्म  
 वर्षाणी
- ७ कृष्णजम्बुवर्षाणी
- ८ मन्मथिनि नद्यपद्मि
- ९ कृष्णवर्षाणी
- १० मन्मथिनि
- ११ मन्मथवर्षाणी
- १२ श्री मन्मथिनि नद्यपद्मि
- १३ श्री मन्मथिनि
- १४ श्री मन्मथिनि
- १५ श्री मन्मथिनि
- १६ श्री मन्मथिनि

लौकिकी त्रिषी  
 पद्मवनी,

- १ सुभमेन्वामी
- २ संवृषामी
- ३ मन्मथवर्षाणी
- ४ मन्मथिनिवर्षाणी
- ५ मन्मथवर्षाणी
- ६ नद्यपद्मवर्षाणी
- ७ मन्मथिनि
- ८ मन्मथिनि
- ९ मन्मथिनि-मन्मथिनि ८
- १० मन्मथिनि
- ११ मन्मथिनि
- १२ मन्मथिनि
- १३ मन्मथिनि
- १४ मन्मथिनि
- १५ मन्मथिनि
- १६ मन्मथिनि

- २५ हेमवंत  
२६ आर्यनाग  
२७ देवंगणिसूरि

यहनी पट्टावली जैसी अमालकचंद दुंढकके हाथकी लिखी हुई है वसीही हमने लिखदी है.

- २५ गोहगणस्वामी  
२६ त्रिपगणस्वामी  
२७ देवद्वी कृमासमन

यह नाम जैसे पार्वतीने अपनी बनाई ज्ञानदीपिकामें लिखे है वैसेही हमने यहां लिखदीए है.

अब पाठकजनो ! तुम विचार करो के ये लौके, और अमोलकचंद दुंढक, और पार्वती दुंढकणी ये कैसे मृपा वादी और मृपा लिखनेवाले हैकि जिनोकां नंदीमूत्रमें विरुद्ध लिखतां नर नही आया है, और अमोलकचंदको लौकेसे, और पार्वतीको लौके और अमोलकचंदसे विरुद्ध लिखतां नय नही आया है. इस पार्वतीने तो अपने वंश गुरु अमोलकचंद दुंढककोजी जूठ लिखनेवाला सिद्ध करा है. बाहरे पार्वती ! तुं ऐसे लक्ष्णोंसे दुंढकोमे ज्ञानवंत बन रही है. इसकी लिखेली सर्व पट्टावली पूर्वोक्त कारणमें जूठी है और इस नरतखंरुमें देवाधि गणि कृमाश्रमणों पीठे तिनकी पट्टावलीका लेख जैनमतमें नही है इस वास्ते दुंढकोने पीठली पट्टावली जो लिखी है सांजी मिथ्या है. श्री आर्य महागिरिकी पट्ट परंपरायमें देवाधि गणि कृमाश्रमणजी हुए है, यहां तक उनकी पट्टावली श्री नंदीजी मूत्रमें है पीठली कोइ ग्रंथमें लिखेलीही नहीं है. और श्री आर्य मुहास्तिकी पट्ट परंपरायमें जो आचार्य हुए तिनकी पट्टावलीका स्वरूप श्री जैनतत्वादर्शनामा ग्रंथमें



मा मातुलाः समेतः त्रिभुवः पतिव्यः सन  
जुगः तत्र त्रीं महाभक्तः तत्र तत्राः त्रिं महाभक्तः  
सत्तमा नाम त्रिणः

२० ग्यानार्थनमो ही गीमन्तः कृष्णः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिं उ  
गता नाम त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः  
गणा चला २०

२१ उग्रउगीको कल्पः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः त्रिभुवः  
करणा

२२ उग्रमे समोस्रणः गणा. उग्रसः उग्रसः गणा संभे  
उग्रको उग्र चला हे

२३ प्रमांजनी गपते नही वेदकल्पमे चली हे सो ही  
सवय लि०

२४ दिमा वेते समोस्रणका कथा च० कहां रपणा लि

२५ दिमा गइ अमुची टालन लगे मुहपती रपनी लि०

२६ मितमाजी कौंन कौंन अवस्ताकी मानते हो सो लि

२७ अप थापना नपेपा मानतेहो के नही

२८ जगवानर्जाका गोमालामे थापना नपेपाहे के नही  
नही तो कयोंकर नहीं जो हे तो अप गोसालेको म  
उर जो थापना नपेपा माने सो समझीष्टी हेके मि  
ष्टीष्टी हे अप कथा जानतहो मत्र लि० पुलासा

२९ ब्रास्कानगरी दाहा हानेकी चली प्रत्माजी मंझन  
कथा कथा हाल चलाहे लि०

३० कृश्रजी इंडोरा फिराया दिप्याके वास्ते पृत्त  
वस्ते मंझनीके वास्ते कथा कथा हुकम दिया हे

३१ नेदनाथजी महाराजने कृश्रजीको कहा है के कृश्र  
सरिपा होवेगा उस वपत किसने वदना करी हे  
सका नाम

- ७ महानमिदमाका ५ नदनीमासको बयोकर नदी मा-  
नेने जो माननेहो तो कितना माननेहो जो पृष्ठा-  
लागी पुता हो कसोपे क्या कहाँ न्यानिमीने जो  
कामनजा शानान्तमे उनका क्या बजन बजाए
- ११ दिनको गिर दहके बजना कितना कितना दिन लग  
१७ मासीने ६ न्तोमे कितना जिपाए पुजासा
- २२ मव पदागेक बाम्मे कपटाप्ने ऊँउ बोल मत बहना  
लगवानती सुती सुगंध पानी कौन मावमेह बहा जि०
- २२ क्या पानी कसोपे लेणा प्रोचनका २२ यकागमे ले  
पनी मकारका बजा हे लेणा मो रपो क नही  
होद नि०
- २३ पदेकनीगी जाम्या मनन करी के द्या कौमीयोकी पा-  
नी जाम्यामे प्रमयाथा रहाने पाठमे लि० दंड क-  
पनी नही कानी जाम्याक राधक हे के विराधक हे
- २४ शहादीगर्भोके मातृ जग्जो श्रावक श्रावहां उगा म-  
पेका नाम गाम राम काम बरवर पवहन प्रार्थिक  
तिथना. देवलोके जाणा राधकय गा माय जाणा क्यों  
के उर जिने बिना नही मानन प्रीतगं मव नि  
शोरमाका जि०
- २५ शहादीगर्भो पां सनीपाके नाम गनेपाके नाम देम  
२२००० एनाके नाम दूट बालसाका जुदा रुदा
- २७ शहीरवां मापदेवांशी गयीं दमिता प्रदुनाको लि०
- २८ नमदानरीके कपाने रौल कौनमा बंदमे पुता क-  
मेमे मव जो पुता कपनेहो के नही उगे गिमे कसाउ उ०
- ३० पुता १२ मकारमे नि पनी मकार बलीहे कही
- ३१ पुताकी लगवानतीरे मूल मननेहो के कम शहा ली

कम जाना माननेका तो गया मन्त लि० हे

४१ जगवानजीके दरमण गरिपा मन्माजाका हे ते  
कम जादा

४२ आपना जगवान जानके न्यंडके जेडी लमांणका  
कया फल

४३ यागीको ज्ञाग करावे तथा जगनी माने कया फल

४४ जगवानजी एक पेत्रमे २४ जा वज्जे रहेतेने के नही

४५ आँगमका मुल पाठ किताणा हे टीका कितनी हे कि-  
सकी करी होइ हे आप मव सच माने के नही जो  
मानो तां कितने पर्वधारककि हे टीका सो जो दम प-  
र्वथी जो उनोने किकृत करी हावे उमका मसकर  
माने मनावे विना आलायां विना प्राणित मुं हावें

४६ जो ग्रंथ हे सची सख हैं किसके वचन हे

४७ जो मंड्र वने हे सो किसकी अग्यासे वनहे उन्नउपा  
सरेका नही देणा कयोके उपाश्रमेही धर्मध्यान कर-  
नेके वास्ते किसीका वनवाना चला नही काइएक  
जगाकी ठीक नही जहा रहे उसका नामज्नी उपाश्र  
केते हे

४८ सत जगा धन परचना क० अगे केसने परचाहे आ-  
नंदजी कामदेवजी प्रदेसी राजाजीने कहा खरचाहे

४९ जिसके घर सुतक होवे उसके घरका आहार नही लेना  
उसके घरके समायक नही करे कां लि०

५० मपण मास तुलसकी तरां हे लेते होके नही कितने  
चीरका लेते हौ ठाठ अनठनी सराव सरीपी किसी  
जगते भीर्मासी रोटी राथ पाते हो के नही क्या



पानजी कीयां रत्न सोनेकीयां गोत्मजीका जाए  
त्माजीकीतिणे काल लग रहे

६६ जो सुरयाव देवताजी पृत्मा पृजीया १०८ सिधां  
विच उन सर्वोका कया नाम हे लवी चोडी रंग उनके  
अग किस किसकी हे

६७ जो माणवचेतमें दाडां हे सो किस कीया हे तिय  
करो कीयां तो ४ चार इंद्र ले जात हे सो किसकी  
यां हे सासतीयां हे के असासतीयां हे लवी मोटी लि-  
सव देवलोककीयां लिपणा

६८ प्रत्मां बनानेवालेको कया फल

६९ प्रत्मांजी मूलवेचणेवालेको कया फल

७० मंडकीयां इटां ढोनेवालेको गंधेको कया फल

७१ मंड बनवाने वालेको १२ देवलोक जाणा कहा लि०

७२ मंड बनवानेवाले कया फल कहांजावे

७३ अपकी पटावली कोनसा हे जिसकी अपकमेंते हो

७४ ८४ गठमां किस गठमे हो गठ कामे चले हे

७५ सतंवरी रुगंवरीकी प्रत्मा माननीका लि०

७६ जगवान चेतन के अचेतन प्रत्मा चेतनके अचेतन

७७ नसीतमे चला हे चणे मात्र पृथ्वी हणे ढणावे अण  
मादेतो मंम जो मंड बनवाने वालेको चला जाण  
के नही

७८ इस्त्री पृत्माजीका संगटा करे के नही

७९ इस्त्री पुजा करे के नही कपडे सहत के रहत

८० इस्त्री सनातर वणे के नही

८१ इस्त्री ढोलकी उने वजावे के नही जगती के वास्ते

८२ तुंगीयाके श्रावण पृत्मा पुजी के नही

- ३ गृह्य वेदकी कमेका कथा अर्प है  
 जौपदीकी पन्ना पुजनके अपन नमदहन के मि-  
 ल्या रहण  
 पन्नाकी तीन प्रकारियां है मंतवरी ठगंवरी चोहद  
 मंतवरी कौन मय कौन अमन कितने विथंकराकीया  
 मन्ना कामे ये कितकी पुत्र  
 सर्वांगीका मन्ना सर्वांगी कथों नहां पनाते  
 जो अन्नामसर्वा के मन्त बुदेरापजादों गृजरंगाले  
 जेमे ११ मों मन्ते के लगन है जो मास मय के  
 लगन है तिसके पुनगारे पानों के नही  
 तासार्थ मन्त गांठे के नही अन्नामसर्वाके पुजन-  
 वास जगे कथा सोना कथा लिपा है  
 ४ चौथे मन्तवरी मन्त विममे १० पापमे माद वादके  
 लगन मन्तवरी काया है के नही  
 ५ मन्तवरी मन्त बुजाके पुजा तिसमे है ममनमे नही  
 तिस कथों पुनवार छोपरी मन्तों पुनपना देव हो  
 मय काय नही तिस मन्तवरी मन्त मन्तवरीका  
 मन्त तिस
- मन्त व का मन्त है मि मन्तवरी कथा मन्त है  
 मन्तवरी मन्तवरी है मन्तवरी मन्तवरी के मन्तवरी  
 मन्तवरी मन्तवरी कथा मन्तवरी मन्तवरीका कथा  
 मन्तवरीके १० मन्तवरी ११ का कथा मन्त  
 मन्तवरी मन्तवरी मन्तवरी के नही  
 मन्तवरी मन्तवरी कथा मन्तवरी है  
 मन्तवरी मन्तवरी के मन्तवरी मन्तवरी मन्तवरी  
 मन्तवरी मन्तवरी के मन्तवरी है

ए० सब सूत्रोंका नाम जो अब मानते हो सबका मुलप  
टीका सबकी लि०

ए० जो आत्मारामजीने जीवनरामजीको चिठी जेजीए  
उसमे लिखा हे के सूत्रमिनुं इतने मिलेहे के गेएनीं  
वाहर हे सो गणतीसं वाहर कितने होते हे दस प  
मजूद हे एसे फूठ बोलएवालेसे चरचा दखसत  
के नही

१०० उसमे लिपा हे के २४०० वरसके मंडू पडे हे २५००  
से मंदर उस वपत उस वपत जो जरथजीकीपां  
प्रत्माथी सो अज्ञ हे के नही तो क्या सबव हे  
१०००००० लाप श्रावग अपने लिपे हे सो जगवा  
नजी कितनेथे सो क्या क्या लिपते हे जिसके विचसे  
सच्च नकालना मुसकल हे फिर कहते हे फेर कहते हे  
के चरचा करो सो क्या बात हे मुगधजनाके जरमाए  
करते हे जितना चिर कोइ मिलदा नही जिस  
कोइ मिला उस वपत पवर नही ठरो के नही  
नाका जवाव इस नही लि० जो तीमीयाके न  
हाए नही देए लिपे सूत्राके अनुसार टंणे प्रश्न  
सं० १९३० चैत्रमुद्री पंचमी दमपत मोहनलाल  
त्मारामजी कौ लेखकका बहु छप हे लीजो चतर  
वार अदका उठा जो लिपा मिठामि डकडं बहु  
शति दुंडक प्रश्न समाप्त ॥

येह ऊपर लिपे हुए प्रश्नों फेर जहां इनके उन  
लिपेगे वहां स्पष्ट लिपेगे कि जिममें वाचकवर्ग हों व



प्र० ए मृपने उतारणे, घी चमाना, फिर जिलाम कर  
और दो तीन रूपैये मण बेचना, सो क्या भग  
नका घी कौमा है सो लिखो.

उ० ए स्वप्न उतारणे घी बोलना इत्यादिक धर्मकी मर  
वना और जिन ड्यकी वृद्धिका हेतु है. धर्मकी  
जावना करनेसें प्राणी तीर्थकर गोत्र बांधता है  
कथन श्री ज्ञाता सूत्रमें है. और जिन ड्यकी वृ  
करनेवालाजी तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन  
श्री संबोधसत्तरां शास्त्रमें है. और घीके बोलने नाम  
जो घी लिखा है तिसका उत्तर जैसे तुमारे ज्ञान  
रांगादि शास्त्र जगवानकी वाणी दो वा न्यार रूपै-  
येकां विकनी है ऐसे घीकाजी मोल पमना है.

प्र० १० माला जिलाम करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना क  
रनी, और जगवानजीका जंमारा रगना कहां लिखा.

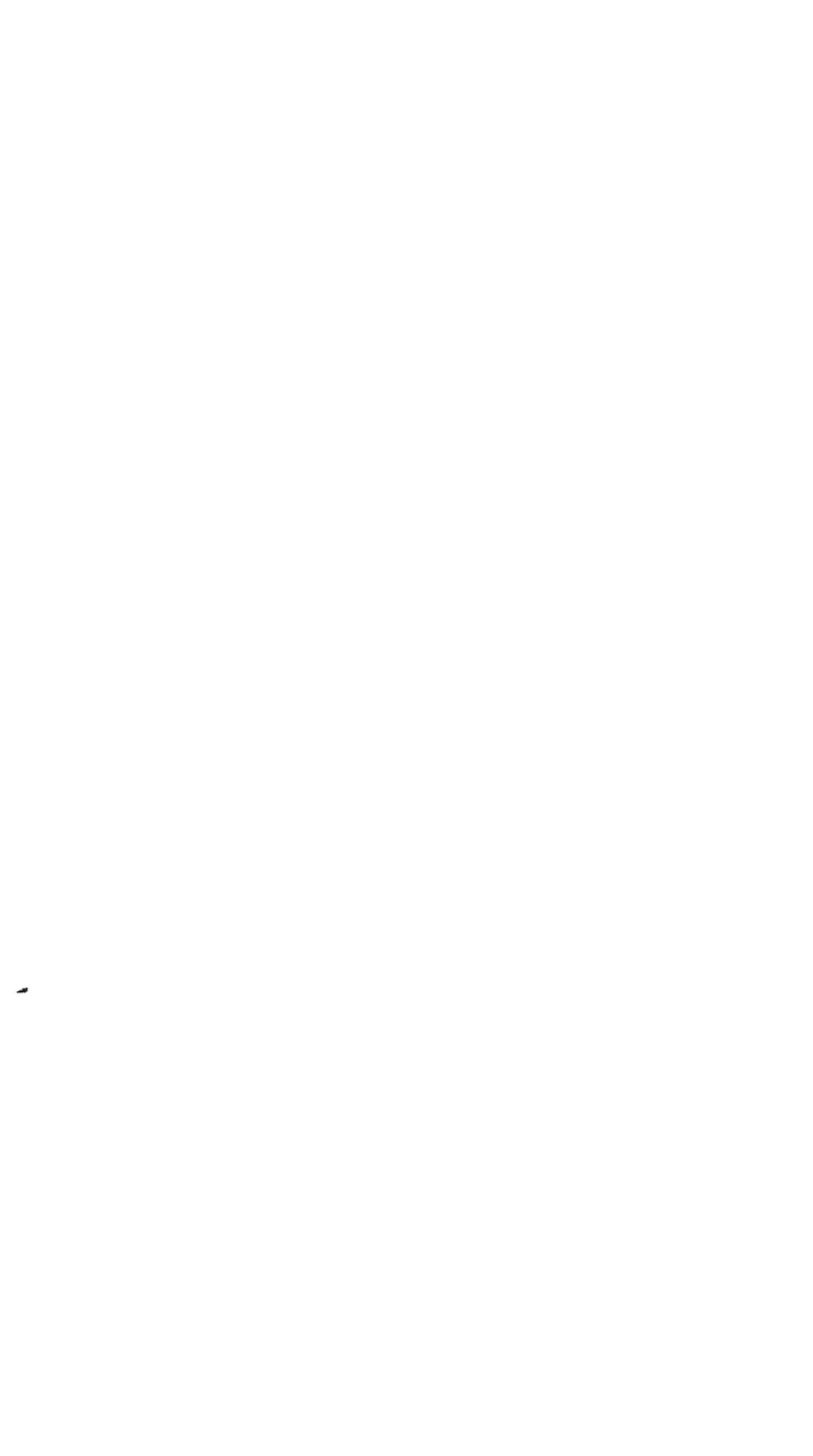
उ० १० मालोद् घटन करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना करनी  
वया जगवानजीका जंमारा रगना यह सर्ग कथा  
शार्त्तविवि शास्त्रमें है.

प्र० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां  
करना आप क्या जानते हो. और उनका जो  
पुण्यत्रोक आप मजादेका बंदणा करके  
करना क्या समयके और नहीं हमें तो क्या मपन

उ० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां  
करना मैं प्रतिमा पुजते जाना जानताहूँ. उनके  
पुण्यत्रोक मजादेके मजादेके और जो  
के पुण्यत्रोक मजादेके श्रीपुण्य मानमद

प्र० १२ जगवानके वरदान कथा





करोगे तब तो हम तुम्हारा भंडार खाता मानेंगे नहीं तो तुम्ही अपने भंडारों में क्या लिख होता है.

१०० नमो भगवते वासुदेवाय महाभारत कृष्णगीतां जिस वचन क-  
हाया कि हे कृष्ण तुम्ही मममरोधा (मेरे महदा)  
होगेना उम वचन किजने पंदना कगीथी उमका  
नाम लिखो.

१०१ उम वचन कृष्ण महाभारतको पंदना कगी वा नहीं  
करे उम मगधी शास्त्रमें कृष्णों चला नहीं है.

१०२ महानिशीथगीका २. पांच वा नवनीतमार उ-  
च्यमान वयोकर नहीं मानेंहो श्रौंग जो मानेंहो तो  
किमनेमें मानेंहो तथा उममें प्रतिमागीकी पूजा  
करे कगने उमके नामे क्या कहा है महानिशीथमें  
कामलप्रतापारका क्या चलन चला है.

१०३ उम मरनीतमार मानने है श्रौंग जो उममें कहा  
हे मां मन है श्रीम कामलप्रतापारका भोगा चलन  
या विमा नरनीतमारमें लिखा है वसेर उमको पूजा यह  
उममें माकाम जोना हेरि नर यथाः शीथलप ना-  
मने नगी हो श्रौंग उममें महानिशीथमें देवेहो श्रौंग  
देकर मानेंहो तो महानिशीथ शास्त्रमेंहो उम मरनी  
पूजाकर उमने है जो कसे प्रमाण मरी कगनेहो तथा  
उममें जिस माननेर उममें कगने लिखा जो विम  
उममेंहोना कगने है उममें उम नाम है श्रौंगे पूजा क-  
गनेर उममेंहोना है जो पूजा परिमनाय कगने व उममें  
उम लिखा उममेंहो उमकी मरी लिखा जो श्रौंग जो  
कगने उमने है उममें या वेहो है कगे उममें मरी  
कगने लिखा उममेंहोना कगने है उममेंहोना

नहीं होती है. जो तो तुमको पंमिताईकी चाह हो और सुधे रस्ते जाना होवे तो किसी गीतार्थ सहस्र सेवा करो. जिससें ज्वरूपीजीम कूपसें निकल जाउ  
 प्र० ३१ दिनमें शिर ढकके चलना कितना दिन चमेतां ढकना ? २ महिने और ६ ऋतुओंमें कितना कितना काल सो लिखना.

उ० ३१ श्री जगवतीजी सूत्रमें कहा है कि सघले दिनमें उस पम्ती है सो उसकी रक्षाके वास्ते हमारे पूर्वाचार्योंने इसतं हकी मर्यादा बांधी हैकि गरमीमें दोषमी दिन चमे तब तक और सांपको दोषमी दिन रहे जबसें बहार जाना होवे तो शीर ढकके जाना जबतक सूर्योदयको दो घन्टी होवे तबतक, इसी तरेहसें चतुर्मासेमें ६ ठेघमी दिन रहे जबसें लगाके ६ ठेघमी दिन चमे तब तक, और श्यालेमें ४ च्यार घडी दिन रहे. जबसें लगाके च्यार घन्टी दिन चमे तबतक शिर ढकना इस वास्ते हम शिर ढकके चलते हैं परंतु तुम दयाधर्मी कहातेहो और खूले मञ्जेके साथ फिरते हो खबर नहीं कितनेही अप्कायांके जीव मारदेते होंगे सो तो ज्ञानी महाराज जाणे. तथा हम पुठते हैकि तुम रात्रीको शिर ढकके चलतेहो सो किस शास्त्रकं मुजिब जेकर कहोंगेकि उमकी रक्षा करनेको ढकने है तो हम पुठते हैकि जगवतीजी सूत्रमें सारा दिन उस पम्ती लिखी है सो मानतेहो के नहीं जो नहीं मानतेहा तोतो हमको पुठनेकी कुठ जरूर नहीं है क्योंकि तुम जगवतीजीका कथन नहीं मानतेहो इम वास्ते जैनमतसें बाहिरहा और जेकर मानतेहो तो

मुनाँ मागेदिन गिर टकके चलना लाडिए इमि वा-  
ने ह्य मुनाँ वलने हेकि किम महम्की सेवा करो  
मोँ नान्दर्य क्या है मो मगजा.

२५ कपडाइ ककके, जूठ बाँजक. और जगवानकी  
मोगंठ जूठी पाकर मत बधावना कौनमें साख्ये है.

२६ मत ब्रीचवे पाखे जूठ नदी धाँजना, कपडाइ नदी  
करनी, जगवानकी मोगंठ नदी पानी भर सर्व सा-  
खोका मगजा है.

२७ नया पाणी कगके लेना और २१ इरीन मका-  
गीइ मणे पाणी धाँवणके लेने नले है मो नयाँ  
परी लेने हो.

२८ इइ जो नयापाणी लेने है मो कगके नही लेने  
है और २१ इरीन मकाके पाणीके बिचरो नया  
पाणी लेना लिखा है नया औरनी पाणीके लिखे  
इइ पाणी शुक हमको पाटुम पमने है मो प्रदाण क-  
रने है परंतु मकनडिम शिम पाणीका कास पढोव  
नावे मो नही लेने है परीन मुक लोक जो मकनलोत  
मिमणे किनलेणे नीर अलज लेने है लेना पाणी मग  
मगके लिखेने हडे जामे लिखा मोगन संवेदे और  
पिलीने मो मो इइने न नयाके नही पार है.

२९ अणे बीजीने जगवान मंगुर मणे कींमोमोनी  
इइत पाणी, पाणामोमोनी मगजामो मणे मणे मो पाण  
मणे १ इइको मकनडिम नही करको अगवाने मगजा-  
वक इइके लिखेने है.

३० १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०.





शनमें है कि कमज्यादे.

उ० ४१ दोनोमेंसे जिसके देखनेसे अधिक चित्ताह्लास।  
सोइ अधिक है.

प्र० ४२ अपने जगवान जानके तालेमें रखनेसे व  
फल होवे.

उ० ४३ प्रतिमाजीकों जगवानकी आकृतिजाणकर रक्षाके  
वास्ते ताले लगाने मां जक्ति है और जक्तिता फल  
मोक्ष है जसें शाखाओं जगवानकी नाणी जाणके  
रक्षाके वास्ते तालेके गंदर रखने.

प्र० ४३ सागीकों जोगी करे तथा जक्ति माने तो क्याफल

उ० ४३ जे सागी है मां किसीका कग जोगी नहीं हो।।  
हे और जो उसको जक्ति पूजा करे उमका महाफलही

प्र० ४४ एक कृत्तमें २४ जोगीम जगवानके जीव एकाके





धामे रत्नवाहुज मितिवन्नात । इम वाग्ने, सुदुष्ट ए-  
तौको श्यावाय रमाना नदी नादिष्ट, क्योंकि मैनमनेके  
आनी सुजिय गही वस्तु एउ चीनोम मय्य पोत्रे जीव  
मगक होयानी हे अरि जीव मंगक यस्तु सुदुष्ट ए-  
पौको रानो योग्य नहीं है जो गावे उनोकी अन्त  
इस्तु सुष्ट तो उन मानवालेहो मन रत्न वाया र-  
के लो एवै नही जानते है. १०

१० गोलरत्ना नाम कधी धर्मश्राद्धिक जिनके जैन  
मार्ग विद्वान कहते है सोनी लज्जक है क्योंकि हमे  
इसी का नाम एवै पहचनेमे एगदि मिनाममे के-  
गही नाम सुधम जैव सुगम होताने है एम वाग्ने  
विद्वानो एवै योग्य नहीं है विद्वानेवना: सुधमः  
एवै वचनान, लज्जता नाम गोमरे एवि वचनान: १०

११ इवाक ( धर्मा ) यदनी अलक है क्योंकि  
एवै एवैमे निष्ठा एवै वाग्नेवनी इति गोनी है,  
१२ धार एवै जीव जीव नाम न लज्जता एवि  
एवै एवैमे एवै सुष्ट नहीं एवै वाग्नेक उर्ध्वान  
एवै एवैमे सुष्ट एवै एवै वाग्नेक सुष्ट  
एवै एवैमे एवै एवै एवै एवै एवै एवै एवै

१३ एवै एवैमे एवै एवै एवै एवै एवै एवै एवै  
१४ एवै एवैमे एवै एवै एवै एवै एवै एवै एवै  
१५ एवै एवैमे एवै एवै एवै एवै एवै एवै एवै  
१६ एवै एवैमे एवै एवै एवै एवै एवै एवै एवै



६ गो मात्र यह काम करते नहीं हैं, परंतु  
 दिन इनमें तथा पंडित न बनारसेवाले  
 योग यह विधीना जंतुजायमें लिया नहीं  
 धरा तो भोग ही शयनी शक्ति भोगे तो  
 नारी तो बनारसेवालेको जन्मोदना को यह  
 जन्मोदनाका शयन जन्मोदनाको शयन  
 १७ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 १८ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 १९ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २० गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २१ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २२ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २३ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २४ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २५ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २६ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २७ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २८ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 २९ गो प्रतिगतीका शयन को नहीं  
 ३० गो प्रतिगतीका शयन को नहीं

- १० ८५ प्रतिमाजी तिन प्रकारकी है श्वेतांवरी, दिगं और बौद्धपतकी इममे मस कौनमी और असस नसी है तीर्थकरोंकी प्रतिमा घरमे रखे के नही किमकी पूजे.
- १० ८५ जैनशास्त्र मृजिब श्वेतांवरी प्रतिमा मस है : घरके मंदिरमें तीर्थकरोंकी प्रतिमाजीकी पूजा करे
- १० ८६ मल्लिजीकी प्रतिमा स्त्रीकी क्यों नही बनाते है
- १० ८६ मल्लिजिनकी प्रतिमा बनाते है जिममें शापमे विमा ननावनी लीयी है उमवरेमे बनाते है
- १० ८७ जो आत्मारामजीके प्रश्न ११ वेदेरागजीको गुण वाले जेजेथे सो मस हैकि पमस, सो शास्य मस कि पमस जिमके अनुगारे जिमे है पांर सो नवेरोहि नही
- १० ८७ वेदेरागजी जाने वा आत्मारामजा जान जे तुमहो ऐं ऐं ऐं करनेका किया जकर है.
- १० ८८ कारणपं जय सोने के नरी या आरागजीम मस पवनमने पागे किया जान विमा
- १० ८९ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९० जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९१ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९२ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९३ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९४ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९५ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९६ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९७ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९८ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० ९९ जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि
- १० १०० जो आत्माराम जाने के वनक कारणपं जाके कि

कई नदी लिखनी क्योंकि सुख्याल चौपट्टीकी  
नजानना देवदों इस नामे सम्यक्तमें नदि लिखनी  
आयकोंके नीचे मन्तोन्धका मन्तर लिखना.

३९ ३५ पुत्रा सम्यक्तकी करणी है और बिना सम्यक्तको  
अंगीकार करे वन अंगीकार होते नदी देग पाकि सबे  
शरीरें सम्यक्त पूज समान है और सुल बिना भाषा  
शरीर नदी है इस नामे पूजानी वनोंके गंनगानही  
तापनी और श्रावकक विन मन्तोन्ध वाणांग सु-  
धमें देग लेने

३९ ३६ मिश्र जगवानका क्या संग है और मिश्रचरमें  
क्या संग है.

३९ ३७ मिश्र जगवानका कोर संग नदी और मिश्रचरमें  
ए संग है.

३९ ३८ असे दृष्टाके सिन्धाम, नीवडी मन्तमे के लीके  
आतीये.

३९ ३९ असे सिन्धाम जगवानकी आशामें है. नदी क्या  
और नदी सिन्धामे.

३९ ४० लीकेकोके आतीये. क्या सम्यक्त है और मन्त  
कोका क्या है.

३९ ४१ असे लीके मन्तमे देवदामे लीके को सिन्धामेदि  
तापन सिन्धामेदिताका असेल नदी लीकेपुत्रा: असे  
३९ ४२ असे मन्तमे.

३९ ४३ असे लीके लीके लीके ३९ ४४ असे लीकेपुत्राकी  
आशामे क्या असे है.

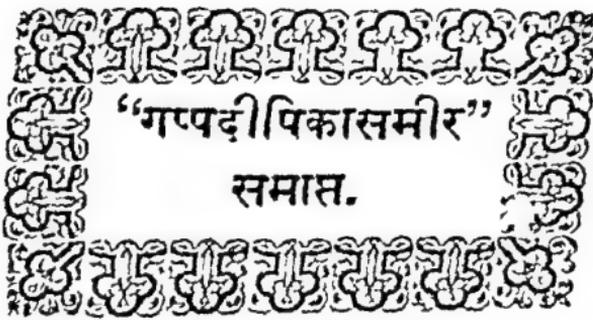
३९ ४५ असे लीके लीके लीके ३९ ४६ असे लीके  
लीके लीके लीके

- २५ सुत्तागमे १ अज्ञागमे २ तज्जयागमे ३ इनमे अगम किसकों कहना और उनका स्वरूप लिखना.
- २६ दीक्षा देनेकी विधि किमतरे है कौनमा पाठ पम् दीक्षा देतेहो और वे पाठ कौनसे शास्त्रमे है.
- २७ सम्यक्त तथा श्रावकोंके व्रत देनेकी क्या विधि और किस शास्त्रानुमार है.
- २८ श्री अनुयोगद्वार मुत्रमे तीन प्रकारकी निर्युक्ति कह है "निक्षेपनिर्युक्ति १ उपोद्घातनिर्युक्ति २ औ मुत्रस्पर्शक निर्युक्ति ३" इन तीनोंका क्या स्वरूप और मुत्रागम हैकि अर्थागम है.
- २९ यह तीनोंही निर्युक्ति एक शास्त्रके वास्ते हैकि म शास्त्रोंके वास्ते है.
- ३० जगवतीजी मुत्रमें तथा नंदीजी विंगरे यणे भाष्यमें अनुयोगकी विधि लिपी है ॥ यतः ॥  
 मुत्तजो गलुगढमो, नीचनिर्युक्ति मीगच जणीच ।  
 नद्व निरविगेमो, एमविहो हंर अणुचमो ॥१॥  
 एग माथाका वात्पयार्थ यह हैकि मुत्र और सुत्ता अर्थ यह पथम कहना, उर्जीवाम निर्युक्ति निर्विष क हना और तीमगीदपे, निर्विषण कहना एग विविध अनुयोग होना है. एग माथामे जो निर्युक्ति और निर्विषण कहा है सो कौनमे आगममे है ना जना एग स्वरूप है.
- ३१ निर्युक्ति और निर्विषण यह दोनाका कता करे है और यह दोनोंही कहा है.
- ३२ लोकात् ३१ मुत्र वासे है और नाहीकाना ३१ म कौनमे मुत्रमे और २२ श्रवणाना ३१ म ३१ म



मन्त्रों को मन्त्रों नसी जाती वान नयाँ कि सुयोदय होता है  
 नव मने लोचनी प्राणों मेंना है पंखु चन्द्रकी त्यागां नं  
 नौयनी है ऐसे जो नौ जग्य प्राणी है और जिमकों मया  
 मन्त्रों विष्णव कर्मने ही चाह है उन प्राणीयांकों तो यह  
 पंखु मानकर मालूम होजायगाकि यह सब है और यह  
 जग्य है और जिमकों चाह नहीं है उनोंके वास्ते हम  
 कुञ्जी जिग नहीं गक्ते है. इत्यन्तम् विस्तरण मंत्र  
 १९४७ प्रथम चाडमागे कृशपदके त्रयोदश्यां तिथौ  
 बुधरागरे ॥

श्याचार्याष्टाधिकमहस्रश्रियायुक्ता श्रीमद्विजया-  
 नंदमुरीश्वरस्यापरनाम्ना श्रीमदात्माराममहामु  
 नेर्जंष्टशिष्यः श्रीमल्लक्ष्मीविजयः तत्रिष्यः  
 श्रीमध्वर्षविजयः तल्लयुशिष्येनवल्लजा  
 रुयमुनिनाकृताः गप्पदीपिकासमीर  
 नाम्नाग्रंथः ॥























— — — — —  
— — — — —  
— — — — —



